टू-दीपू
दो उस्ताद
बुक्स

दीपू
दो उस्ताद
बुक्स

न्दू-दीपू सीरीज—

दो उस्ताद

(जासूसी बाल उपन्यास)

"कोबरा ये वो शिकंजा है जो उस समय से तेरे पीछे है जब तू एक मामूली चोर था—तेरे हाथ एक बार भारी खजाना लग गया था जिसके बदौलत तू कोबरा बन बैठा—मुझसे हर बार बस यही चूक हुई कि मैंने तेरे आखिरी रास्ते पर नजर नहीं रखी—आज तेरा आखिरी रास्ता भी बन्द है—।"

प्रकाशक : विमल प्रकाशन,
C-३/१२१, अशोक विहार,
फेज-II
दिल्ली-११००५२

मुद्रक : नवनीत प्रिण्टर्स,
१४७० जी, प्रतापपुरा, गली नं० २, वैस्ट
रोहताश नगर, शाहदरा, दिल्ली-११००३२

दो उस्ताद : चन्द्र-दीपू सीरीज

मूल्य : एक रुपया पचास पैसे

दो उस्ताद

भारतीय प्राचीन वस्तु संग्रहालय एवं सर्वेक्षण संस्थान।

'सेन्ट्रल म्यूजियम' इसी संस्थान के सबसे प्रसिद्ध म्यूजियमों में से था—इस म्यूजियम की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि यहां पर संसार की प्राचीनतम वस्तुएं संग्रहित थी—जिसकी झलक से संसार की हर तरह की सभ्यता का अहसास होता था कुछ वस्तुएं तो इस संग्रहालय में ऐसी थी जिनका सम्बन्ध लाखों वर्ष पूर्व की मानव सभ्यता से होता था—इसी कारण ऐसा कहा जाता था कि यह संसार का सबसे बड़ा एवं महत्वपूर्ण 'प्राचीन वस्तु संग्रहालय' है और शायद यही कारण था कि देश-विदेश के अनेक इतिहास के छात्र एवं रिसर्चर यहां आते रहते थे और अपने विषय के बारे में अध्ययन एवं रिसर्च करते थे।

इसी सेन्ट्रल म्यूजियम में रोज की तरह आज भी खूब चहल-पहल थी, देश-विदेश के अनेक छात्र एवं पर्यटक म्यूजियम में इधर-उधर घूम रहे थे। कुछ सामने बने एक विशाल मुख्य-द्वार से अन्दर की ओर जा रहे थे और कुछ जो म्यूजियम देख चुके थे बाहर की ओर आ रहे थे। मुख्य द्वार से आरम्भ होती एक चौड़ी एवं खूबसूरत बदरपुर की सड़क थी जिसके दोनों ओर फूलों के पौधे एवं गमले रखे हुए थे। वह सड़क कुछ आगे की ओर आकर दो भागों में बंट जाती थी एक भाग तो म्यूजियम की इमारत की ओर चला जाता था और दूसरा भाग इस इमारत के लॉन की ओर चला जाता था।

यह एक खूबसूरत लॉन था जिसके बीचों-बीच एक गोलाकार

कैन्टिन बनी थी—जिसकी चारों ओर छोटे-छोटे गोल लोहे के मेज एवं कुर्सियां पड़ी थी—लोग वहां आकर बैठ जाते और कैन्टिन का बैरा उनके पास आता और आर्डर लेकर चला जाता था।

इसी कैन्टिन के प्रवेश द्वार के पास लगी एक टेबल के पास दो किशोर बैठे थे—वह हर आने-जाने वाले पर सतर्क निगाह रखे थे। उनकी टेबल पर कॉफी के दो कप रखे थे जिनसे वह कॉफी सिप-सिप कर पी रहे थे।

आज इतवार का दिन था—स्कूलों आदि में छुट्टी का दिन था—। दीपू सोच रहा था आज वह सब झंझटों से दूर है आज न सुबह-सुबह स्कूल जाने की चिक-चिक है न कोई चिंता कि किसी टीचर को होमवर्क दिखाना है या फिर किसी प्रकार के प्रश्न पूछे जाने पर उत्तर न देने पर पिटाई होगी। वह सुबह देर तक पसर कर सोया और जब ऊब गया तो उठा, स्नान इत्यादि से निपटकर नाश्ता कर सबसे पहले उसने समाचार-पत्र देखा—और यह देखकर उसे प्रसन्नता हुई थी कि आज 'मोर्निंग-शो' में जेम्सबांड की फिल्म लगी है—बस फिर क्या था उसने अपना सारा प्रोग्राम बना डाला—कुछ भी हो आज वह इस फिल्म को देखे बगैर नहीं छोड़ेगा, आगे भी एक बार निकल गयी थी—उसने सोचा—और घड़ी की ओर देखा—आठ बजे थे—सन्तुष्ट होकर उसने कपड़े पहने और चन्दू के घर की ओर बढ़ा—वह जानता था कि चन्दू भी इतवार को देर तक सोता है जब वह मुझे इस तरह सजा-संवरा देखेगा तो चौंक जाएगा तब मैं उसे चिढ़ाऊंगा कि बेटा जल्दी उठना चाहिए—जल्दी उठने के बहुत से फायदे होते हैं, सेहत अच्छी रहती है—मुझे देखो उठकर बाकायदा तैयार होकर यहां पर पहुंच गया हूं परन्तु साहब को सोने से फुर्सत नहीं—वह इसी तरह की दिमागी खिचड़ी पकाता हुआ चल रहा था कि अचानक एक आवाज ने उसके बढ़ते हुए कदमों को रोक दिया।

"दीपू···!" वह आवाज फिर उभरी।

दीपू रुक गया सिर्फ रुका, परन्तु उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा इसकी उसने जरूरत नहीं समझी वह जानता था कि पुकारने वाला और कोई नहीं चन्दू ही है। उसने सोचा—चन्दू ने यहां आकर उसकी सारी दिमागी खिचड़ी खा ली है—जो वह अभी तक पका रहा था और रोब झाड़ने का यह मौका भी हाथ से निकल गया। फिर वह तेजी से आवाज की दिशा की ओर पलटा साथ ही बड़-बड़ाया—'सत्यानाश—!'

दीपू पलटा तो उसने देखा कि चन्दू उसके पीछे खड़ा मुस्करा रहा है। वह भी उसी की तरह सजा-संवरा है एकदम नया सूट पहने है। कुछ देर उसे हैरत से देखने के पश्चात् दीपू बोला—

"धत तेरी की···खोदा पहाड़ निकला चूहा—इसका मतलब तुमने भी समाचार-पत्र देख लिया था—देखा, हमारे विचार भी आपस में कितने मिलते-जुलते हैं।"

"कैसे विचार।" चन्दू ने अचरज से पूछा।

"वाह पठ्ठे···हमें ही बनाने लगे—दरअसल इसमें तुम्हारा कसूर नहीं है···जेम्सबांड के चाहने वाले इसी तरह दीवाने हो जाते हैं···जैसे हम दोनों।" दीपू ने गर्दन हिलाते हुए कहा।

"हम दोनों ? अबे तू क्या बड़बड़ा रहा है···और यह जेम्स-बाण्ड कहां से आ टपका···कहीं तू नींद में तो नहीं। अबे आज तो मूड बनाकर आया हूं···आज हम दोनों 'सेन्ट्रल म्यूजियम' चलेंगे ···सुना है वहां एक विशेष प्रकार की तश्तरी लाई गई है जो एक बहुत ही दुर्लभ बहुमूल्य धातु की बनी है—जिस पर कुछ अंकित है ···विशेषज्ञों का कहना है इस पर जो कुछ अंकित है···वह···।"

"ऐसी-तैसी···तेरी और तेरे विशेषज्ञों की···देख चन्दू मैं सीधी तरह से कहता हूं कि आज मैं तेरे साथ जेम्सबाण्ड की फिलम देखूंगा···और कुछ नहीं। मैं इस फिलम को देखने की बड़ी इच्छा रखता हूं···और फिर मुझे प्राचीन वस्तुओं में कोई दिलचस्पी नहीं है···साला जब स्कूल में इतिहास ही मेरे पल्ले नहीं पड़ता तो

प्राचीन वस्तुओं को मैं क्या समझूंगा···छोड़ तू भी इन बेकार की बातों को···क्या हीरो है जेम्सबाण्ड···मजा आ जाएगा फिल्म देख कर।" दीपू पहले तो बिगड़ गया लेकिन फिर बाद में ऐसे बोला जैसे चन्दू को मना रहा हो।

"ओह···तो यह बात है···तभी मैं कहूं कि दीपू इतनी जल्दी इतवार को बिस्तर छोड़ने वाला नहीं···खैर कोई बात नहीं··· बिगड़ो नहीं···हम फिल्म भी देखेंगे और म्यूजियम भी—पहले म्यूजियम देखते हैं फिर फिल्म देख लेंगे।" चन्दू ने समझाते हुए कहा।

"वाह प्यारे···तेरा भी जवाब नहीं—क्या बुद्धि पाई है— अबे फिल्म 'मोर्निंग शो' में लगी है···इसलिए पहले फिल्म देखेंगे और बाद में म्यूजियम···समझे।" दीपू हाथ झटकते हुए बोला।

"ओह···दीपू प्यारे फिर तो समझो कि हम फिल्म नहीं देख सकते।" चन्दू ने ऐसे कहा जैसे कि वह भी बड़ा निराश हुआ हो।

"वाह यह भी कोई बात हुई···भला क्यों नहीं देख सकते हम फिल्म—जानता है जेम्सबाण्ड की फिल्म है···जेम्सबाण्ड की···।" दीपू फिर बिगड़ गया।

चन्दू भोलेपन से बोला—"जानता हूं दीपू पर हम बाल सीक्रेट सर्विस के सदस्य हैं···।"

"हुआ करें···इसका मतलब यह कब है कि हम कोई फिल्म न देखें···कोई मनोरंजन न करें हम फिल्म देखेंगे और जरूर देखेंगे··· अगर तू नहीं गया तो मैं अकेला ही देखूंगा···समझे।" दीपू उसी भाव से बोला—"मैं जा रहा हूं अगर तुझे चलना है तो चल— वरना देर हो रही है।" और दीपू सचमुच पलट कर चल दिया।

"अरे···अरे···कहां चले···अमां कभी यह भी हुआ है कि दीपू या चन्दू में से कोई भी अकेला कहीं जाए—वह जहां जाते हैं— इकट्ठे जाते है, खाते हैं, पीते हैं—जानता नहीं कि दीपू-चन्दू की जोड़ी कितनी मशहूर है और तू अकेला जा रहा है—परन्तु क्या

करे दीपू हमने यह जो जासूसी का फंदा गले में डाला है इसे तो निभाना है कि नहीं—हमें हुक्म मिला है कि आज हम 'सेन्ट्रल म्यूजियम' में ही रहें—वहीं घूमे-फिरे और पिकनिक मनाएं—और हुक्म की तामील न हो, क्या चन्दू-दीपू के होते कभी ऐसा हुआ है।" चन्दू ने बढ़ते हुए दीपू के गले में बांहें डाल दीं।

"लेकिन कैसा हुक्म—।" दीपू ने झुंझलाते हुए कहा—"तू साफ-साफ क्यों नहीं बताता।"

"साफ-साफ क्या बताऊं—बस हमें हमारे विभाग से आदेश हुआ है कि आज हम सारा दिन 'सेन्ट्रल म्यूजियम' में ही गुजार दें—बस वहीं घूमे-फिरें और जो कुछ मर्जी करें—सिर्फ अपनी आंखों को चौकन्नी करके लोगों पर नजर रखें—किसी से कुछ न कहें चाहे कितना बड़ा ही बखेड़ा क्यों न खड़ा हो जाए—संक्षेप में तमाशायी बनकर तमाशा ही देखने का आदेश मिला है—और तुम अच्छी तरह जानते हो कि हमें आदेश कौन दे सकता है—अब अच्छे बच्चों की तरह बगैर किसी तरह की जिद करे मेरे साथ चलो।" चन्दू ने दीपू को मनाया।

दीपू को जैसे सांप सूंघ गया हो—उसे ऐसा लग रहा था कि जेम्सबाण्ड की फिल्म हाथ से निकल जाने पर एक बहुत बड़ा खजाना हाथ से निकल गया हो—वह मरे-मरे कदमों से चन्दू के साथ बढ़ रहा था—फिर ऐसा लगा जैसे उसके दिल ने कुछ कहा हो—"दीपू उदास क्यों होते हो—जेम्सबाण्ड की फिल्म निकल गई तो क्या? तुम क्या किसी जेम्सबाण्ड से कम हो। वह पर्दे पर अपने जोहर दिखाता है—काल्पनिक है—और तुम तो वास्तविक जीवन में लोगों को अपनी बहादुरी का कमाल दिखाते हो—तुम सच्चाई हो—फिर उदासी क्यों···अब नहीं फिर सही—।"

और इस विचार से उसे बल मिला—उसने अपने सिर को झटका दिया—और तेज कदमों से उत्साहित होकर 'सेन्ट्रल म्यूजियम' की ओर बढ़ने लगा।

इसके बाद दोनों 'सेन्ट्रल म्यूजियम' में थे—जिसकी कैन्टिन में बैठे दोनों कॉफी पी रहे थे—परन्तु उनकी आंखें चौकन्नी थीं—जो कोई भी उनके सामने से गुजरता, वह उसकी तस्वीर अपनी आंखों के सहारे दिल में उतार लेते।

शाम हो चली थी—परन्तु म्यूजियम देखने वालों का अभी भी तांता-सा लगा था—सुबह से अभी तक कोई भी अप्रिय घटना नहीं घटी थी। लोग म्यूजियम देखकर आते तो कैन्टिन में अथवा लॉन की हरी-हरी घास पर बैठ जाते थे···जिन्होंने यह म्यूजियम पहली बार देखा था वह इसकी बड़ी तारीफ करते थे और जो पहले भी वहां आ चुके थे···वह यहां पर लायी गई नई प्राचीनतम वस्तु की तारीफों के पुल बांधा करते···परन्तु एक विचित्र वस्तु का जिक्र हर कोई करता था—एक दुर्लभ अनमोल धातु की तख्ती की जिस पर कुछ अंकित था आड़ी-तिरछी रेखाओं के रूप में।

ज्यादातर यहां पर आने वाले लोगों में से या तो इतिहास के छात्र-छात्राएं थी या पुरातन वस्तुओं के रिसर्चर थे सब अपने ढंग से बातें करते थे। उनकी बातें चन्दू-दीपू के पल्ले नहीं पड़ती थी—कोई उस तख्ती का सम्बन्ध किसी प्राचीन सभ्यता से जोड़ता था और कोई किसी दूसरी सभ्यता से—यहां तक की उनके साथियों में आपस में काफी गर्मागर्म बहस भी हो जाती थी···परन्तु अधिक चतुर साथी उस तख्ती का सम्बन्ध किसी-न-किसी प्राचीन सभ्यता से जोड़ ही देता था।

चन्दू-दीपू को ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी पागलखाने में आ गए हों—उनके आसपास चारों तरफ पागल ही पागल थे जो अपनी ही हांकते थे किसी और की सुनकर राजी ही न थे। दीपू को तो एक जगह बहुत जोर से हंसी आ गई जब उसने देखा कि एक

मोटी-सी अधेड़ औरत अपनी कुछ इतिहास की छात्राओं के सामने खड़ी कह रही थी—

"गर्ल्स—जैसा कि तुम जानती हो कि मैंने इतिहास के क्षेत्र में बहुत-सी खोजे की हैं बहुत-सी वस्तुओं पर रिसर्च की है···हर सभ्यता के इतिहास के बारे में कुछ कहा है लिखा है—और मेरी अब तक की रिसर्च के अनुसार यह तख्ती जो इस म्यूजियम में लाई गई है हजारों साल पुरानी है···इसका सम्बन्ध अफ्रीका के एक बहुत बड़े राजघराने से है—और जो कुछ इस पर अंकित है···वह दर-असल कोई भाषा नहीं···उस राजघराने के खजाने का नक्शा है···मेरे अनुमान व रिसर्च के अनुसार वह खजाना अरबों रुपयों का हो सकता है···मैं इस बात पर भारत सरकार का ध्यान आकर्षित करूंगी कि ऐसी बहुमूल्य वस्तुएं प्रदर्शनी के काबिल नहीं होती···।"

चन्दू-दीपू पास ही खड़े थे···दीपू आगे बढ़ा और बोला—"आण्टी जी आप झट से इमारत के अन्दर जाइए—वह तख्ती शीशे के शो-केस में ही रखी है—अपना भारी भरकम घूंसा उस शीशे पर मारकर उसी हाथ से तख्ती को बाहर खींच लो—फिर उसे जल्दी से साड़ी के पल्ले में लपेटो और नौ-दो ग्यारह हो जाओ—फिर आप अरबपति हो जाएंगी···टाटा, बिरला को भी मात कर जाएंगी।"

इस पर सभी लड़कियां जोर से हंस पड़ी। बस फिर क्या था वह औरत गुस्से से आग बबूला हो गरजी—

"नॉनसेन्स···इडियट ब्वॉय यहां गर्ल्स के बीच में क्या करता है।" और वह दीपू को पकड़ना चाहती थीं परन्तु वह भाग खड़ा हुआ, और भागते हुए भी बोल गया—"डोण्ट माइण्ड आण्टी—मैंने तो केवल सुझाव ही दिया है—नहीं पसन्द तो मत मानो।"

दीपू को भागता देख वह औरत रुक गई और पलट कर चन्दू से बोली—"इस लड़के को समझा लो—वरना किसी दिन किसी के हाथों पिटेगा।"

लड़कियां अभी भी तालियां पीट-पीटकर हंस रही थी वह उनसे बोलीं—"खबरदार—स्कूल चलकर तुम्हारी खबर लूंगी—अब चलो···।"

बस···सुबह से शाम होने तक यही एक मनोरंजक घटना घटी अन्यथा वह सारा दिन बोर ही होते रहे—वह कई बार इमारत के चक्कर लगा कर सारी वस्तुओं को देख चुके थे—उस तख्ती को भी देखा था—जिसके बारे में विद्वान लोग बैठे न जाने क्या-क्या कह रहे थे परन्तु उन्हें वह बिलकुल वैसी लगी जैसे कप-प्लेट रखने वाली छोटी-सी ट्रे हो।

लेकिन तभी इमारत में भगदड़-सी मच गई। चन्दू-दीपू के कान चौकन्ने हो गये—दीपू बड़बड़ाया—"वो मारा···साले सवेरे से बोर हो गये थे—अब मजा आयेगा—भला मैं भी सोच रहा था कि हमारा विभाग हमें यूं ही बोर करने के लिए थोड़ी न बुला सकता है कोई न कोई गड़बड़ तो होनी चाहिए।"

उन्हें ज्यादा देर इन्तजार नहीं करना पड़ा—पुलिस कर्मचारियों एवं म्यूजियम के रक्षक इधर-उधर भाग रहे थे—तभी स्पीकर से आवाज उभरी—

"पर्यटकों से अनुरोध है कि वह जहां खड़े हैं वहीं खड़े रहें—आपको सूचित किया जाता है—कि म्यूजियम में लाई बहुमूल्य तश्तरी चोरी हो गयी है—अतः आप में से जो भागने की चेष्टा करेगा—संदिग्ध समझा जा सकता है।"

"तख्ती चोरी हो गई है···तख्ती···चोरी···हो···गई।" हवा में एक भिनभिनाता शोर-सा उमड़ा।

चन्दू-दीपू तुरन्त इस चेतावनी के बावजूद म्यूजियम के मुख्य द्वार की ओर भागे···मुख्य द्वार पास ही था—अचानक एक व्यक्ति लम्बा-सा हैट लगाए उनके पास से गुजर गया और धीमे से बड़बड़ाया—"सिर्फ तमाशा देखना है—और आंखों से पहचानना है···।"

चन्दू-दीपू की गति धीमी हो गई है—उन्होंने पलटकर देखा—परन्तु वह व्यक्ति भीड़ में खो गया था।

तभी अचानक एक मोटर-साइकिल द्वार के पास प्रकट हुई—चौकीदार अभी विशाल द्वार को आधा ही बंद कर पाया था—परन्तु वह सवार अधखुले द्वार से बाहर निकल गया—साथ ही एक साथ उस मोटर-साइकिल सवार पर कई फायर किये गए परन्तु कोई भी उसे नुकसान न पहुंचा सका—तभी वहां द्वार पर एक पुलिस जीप प्रकट हुई जो खतरे का सायरन बजा रही थी—और—वह उस मोटर-साइकिल की दिशा की ओर भागने लगी।

चन्दू-दीपू सिर्फ हाथ मलकर रह गये उनके दिल में आया कि पास खड़े पार्किंग के वाहनों में से किसी को उठाकर उस मोटर-साइकिल का पीछा करें—परन्तु उन्हें ऐसा करने का आदेश नहीं था—बस वह मन मसोस कर रह गये—सिर्फ तमाशा ही देख पाये—सिर्फ इतना कि मोटर-साइकिल पर बैठकर एक लम्बा-सा नौजवान काला ओवरकोट पहने वह तख्ती चुरा ले गया था शायद उसने चेहरे पर भी नकाब डाला हुआ था ऐसा उन्होंने महसूस किया—वह उसको स्पष्ट नहीं देख पाये थे। थोड़ी देर बाद पुलिस ने औपचारिक-सी तलाशी लेने के बाद सबको जाने की इजाजत दे दी और म्यूजियम को बंद कर दिया।

चन्दू-दीपू सोच रहे थे—कि आज उन्हें इतना विचित्र आदेश क्यों मिला—इसका कुछ-न-कुछ तो कारण होना चाहिए—और वह दोनों इसी रहस्य को सुलझाने के लिए बाल सीक्रेट सर्विस की इमारत की ओर बढ़ रहे थे।

□ □

मोमबत्ती का बहुत धीमा मरियल-सा उजाला उस सीलन-भरी कोठरी में फैला हुआ था—मोमबत्ती लकड़ी के एक पुराने मेज

पर रखी थी और उसके प्रकाश के सीमित दायरे में सिर्फ मेज ही नजर आ रही थी जिसके चारों ओर कुर्सियों पर चार व्यक्ति बैठे थे—मोमबत्ती के प्रकाश के नीचे मेज पर एक धातु की प्लेट रखी थी और इस समय वे चारों व्यक्ति उस धातु की प्लेट को ही देख रहे थे—जिस पर कुछ आड़ी-तिरछी रेखाओं के अलावा स्पष्ट भाषा में कुछ लिखा हुआ था ।

चारों में से एक व्यक्ति जो दोहरे शरीर का था और जिसके शरीर पर कीमती सूट था और बायें हाथ की दो उंगलियों में हीरे की अंगूठी जगमगा रही थीं···वह धातु की प्लेट को लैंस की सहायता से बहुत बारीकी से देख रहा था···बाकी तीनों व्यक्ति काफी बेचैन से नजर आ रहे थे···ऐसा लगता था कि जैसे उन तीनों को पूरी आशा थी कि चौथा व्यक्ति धातु की प्लेट को देखने के बाद कोई रहस्य खोलेगा—जिसे सुनने के लिए वे बेचैन थे ।

"ठीक है—।" सहसा दोहरे शरीर वाले ने लैंस एक तरफ रखते हुए कहा—"यह असली है···।"

बाकी तीनों व्यक्तियों ने एक गहरी सांस छोड़ी—लेकिन अभी रहस्य खुला नहीं था—यह उनकी आधी सफलता थी कि यह धातु की प्लेट असली थी···।

"क्या तुम इसकी भाषा समझ गये हो···?" एक व्यक्ति ने पूछा ।

"समझा तो नहीं चौहान ! लेकिन विश्वास है समझ जाऊंगा —मुझे चौबीस घण्टे का समय चाहिए यानि एक दिन···।" दोहरे शरीर वाले ने कहा ।

"ठीक है—एक दिन तुम्हें मिल जायेगा···।" चौहान ने कहा और अपने बाकी दोनों साथियों की ओर देखा···उसके दोनों साथियों ने आंखों के इशारे से सहमति दे दी ।

"मैं कल इसी समय यहां आ जाऊं या तुममें से कोई एक मुझे लेने आयेगा···।" दोहरे शरीर वाले ने पूछा ।

"क्षमा कीजिए—इस समय भी हममें से एक आपके साथ जायेगा···वह आपके साथ आपकी कोठी पर ही रहेगा···और कल इसी समय हम लोग भी कोठी पर पहुंच जायेंगे—फिर जैसा होगा सोचा जायेगा···।"

"जैसी तुम्हारी मर्जी···।" दोहरे शरीर के व्यक्ति ने कहा और उठ खड़ा हुआ—"चलिए कौन चलेगा मेरे साथ।"

"कुमार तुम जाओ···।" चौहान ने अपने साथी से कहा—जो इन चारों में सबसे कम उम्र का था···उसका शरीर गठीला था—चुस्ती-फुर्ती उसके अंग-अंग में भरी हुई थी—चेहरा गोल और सुर्ख था ।

"चलिये रायसाहब···।" कुमार दोहरे शरीर के व्यक्ति से सम्बोधित हुआ···और धातु की प्लेट को उठाकर अपने ओवरकोट की भीतरी जेब में छिपाने लगा ।

"कुमार—कोई बात हो तो होटल फोन कर देना···वैसे हम खुद खबर लेते रहेंगे···।" चौहान ने कहा ।

फिर उस कमरे में सिर्फ दो व्यक्ति रह गये···।

बाहर से किसी वाहन के इंजन की धीमी-धीमी आवाज आ रही थी । जब तक वह आवाज आती रही सीलन-भरी कोठरी में बैठे दोनों व्यक्ति खामोश रहे—चौहान सिगार के कश लगा रहा था ···जबकि उसका साथी अपने पाइप में तम्बाकू भर रहा था ।

इंजन की आवाज जब धीमी होती हुई गायब हो गई···तब चौहान ने कहा—"खान—तुम खामोश क्यों हो···?"

"सोच रहा हूं···।" उसके साथी ने पाइप मुंह में रखा और लाइटर की लौ से सुलगाने लगा ।

"क्या सोचा फिर···?"

"यही कि राय मुझे ठीक आदमी नहीं लगा—जहां तक मेरा ख्याल है वो हमें कहीं-न-कहीं धोखा देगा···।"

"इसीलिए मैंने कुमार को भेज दिया है—कुमार को मैंने

इशारा कर दिया था—वह खुद भी कम समझदार नहीं है—उसकी दृष्टि गिद्ध की दृष्टि है—अगर उसे जरा भी गड़बड़ नजर आई—वह राय की गरदन मरोड़ देगा…।"

"सवाल राय की गरदन मरोड़ने का नहीं है—सवाल है—क्या राय हमें वही सब कुछ बतायेगा जो प्लेट पर लिखा है…।"

"हूं…!…इस बारे में हमें सोचना चाहिए…?"

"मैं सोच चुका हूं…।"

"क्या…?" चौहान ने चौंककर अपने साथी खान की ओर देखा।

"मैं आज की रात राय की कोठी पर रहूंगा—कुमार की मदद के लिए।" खान ने कहा।

"क्या यह जरूरी है…?"

"हां—मेरी वहां उपस्थिति का कुमार को भी पता नहीं चलेगा—लेकिन मेरी निगाहें राय पर रहेंगी—अगर वह हमको धोखा देना चाहता है तो वह प्लेट पर लिखे शब्दों की दो प्रतिलिपि तैयार करेगा—एक अपने लिए—जिसमें सच होगा—दूसरी हमारे लिए—जिसमें झूठ होगा…।"

"ठीक है, तब तक मैं सहगल से बात पक्की कर लूंगा कि हमारे साथ चलेगा या नहीं…।" चौहान ने कहा।

कुछ देर बाद वे दोनों कोठरी से निकले—चौहान ने मोमबत्ती बुझा दी थी—बाहर आकर कोठरी को ताला लगाया।

यह एक पुराने ढंग का बना हुआ मकान था—इसमें तीन कोठरियां और थीं जिन पर ताला लगा था—छतें और दीवारें सब कच्ची थीं—प्लास्टर उखड़ा हुआ था—चौक में फर्श नहीं था—ईंटें बिछी हुई थीं—मगर कोठरी में फर्श था जो कई जगह से उखड़ा हुआ था।

मकान के बाहर एक मोटर-साइकिल खड़ी थी—जिसे स्टार्ट करने के बाद खान उस पर सवार हो चुका था।

खान ने चौहान को मेन गेट पर ताला लटकाते देखा—और मोटर-साइकिल को रेस दे दी।

चारों तरफ उजाड़ था—दूर-दूर तक न कोई मकान था—न ही वहां कोई ऐसा चिन्ह ही था कि वहां आदमी रहते हैं। रात के बारह बज रहे थे और खान के जाने के बाद चौहान वहां अकेला रह गया था।

मकान से दो पगडण्डी जाती थीं—एक चौड़ी पगडण्डी थी जिस पर खान मोटर-साइकिल पर गया था—दूसरी बहुत पतली पगडण्डी थी जिसके दोनों ओर झाड़ियां उगी हुई थीं—जो कहीं-कहीं पगडण्डी पर फैली हुई थी—उस ओर जाने वाले को उनसे बचकर निकलना होता था।

चौहान उसी पगडण्डी पर चल पड़ा। उसकी चाल में कोई सतर्कता नहीं थी—रास्ता देखने के लिए उसने पैन्सिल टार्च निकाल ली थी—और किन्हीं विचारों में खोया हुआ—धीरे-धीरे मकान से दूर होता जा रहा था।

सहसा ही वह ठिठक गया—उसे ऐसा महसूस हुआ—जैसे कोई उसका पीछा कर रहा है।

चौहान ने पलटकर देखा—पैन्सिल टार्च के सीमित प्रकाश में उसे कुछ नजर नहीं आया—वह आहट रुक चुकी थी जिसे सुनकर वह ठिठका था।

चौहान को लगा यह उनके मन का वहम है…भला यहां कौन आ सकता है—और फिर पीछा क्यों करेगा…? जो काम जो वह करने जा रहे थे—उसके बारे में सिर्फ चार व्यक्ति जानते थे—राय को आज ही बताया गया था—बाकी तीन में एक वह खुद था—दूसरा खान था और तीसरा कुमार—और यह तीनों किसी को कुछ नहीं बता सकते थे।

उसने सोचा यह उसका वहम है—लेकिन वह आवाज—जैसे कोई दबे पांव—पगडण्डी पर पड़ी सूखी पत्तियों को मसलता हुआ

चला आ रहा हो—वह आवाज उसे सन्देह में डाल रही थी कि कोई उसके पीछे है।

कुछ क्षण वह किसी आहट की प्रतीक्षा करता रहा—फिर पलट कर अपने रास्ते पर चलने लगा—मगर अब वह सतर्क हो चुका था—उसके कान अपने कदमों की आहट के अलावा किसी भी दूसरी आहट को सुनने के लिए बेचैन थे।

अभी वह कुछ ही कदम आगे बढ़ा था कि उससे लगभग दस कदम आगे झाड़ियों में खलबली-सी मची—चौहान का हाथ पलक झपकते ही जेब में गया और बाहर आ गया—अब उसके हाथ में छोटा-सा पिस्तौल था।

पिस्तौल का रुख उसने झाड़ियों की ओर कर दिया और धीमी किन्तु कठोर आवाज में गुर्राया—"जो भी है—सामने आ जाये—क्योंकि मैं गोली चलाने से पहले तुम्हारी सूरत देखना चाहता हूं—मुझे मालूम है तुम कहां छिपे हो'''।"

और तभी'''।

चौहान के पीछे से एक लम्बा-तगड़ा साया प्रकट हुआ—उसके बदन पर सिर्फ एक जांघिया था वह भी कपड़े का नहीं किसी लम्बे रोयेंदार जानवर की खाल का बना हुआ'''उसका पूरा शरीर काला था—शत-प्रतिशत उसने अपने शरीर पर काला रंग किया हुआ था—उसके सफेद दांत थे—जो चमक रहे थे'''उसकी आंखें चीते की-सी चमकदार थीं—।

चौहान के ठीक पीछे वह साया खड़ा था—मगर चौहान को उसका आभास नहीं हुआ था'''।

सहसा ही पीछे आने वाले व्यक्ति ने अपने दोनों हाथ आगे बढ़ाये—दूसरे ही क्षण उसका एक हाथ चौहान की गरदन से लिपट गया'''और दूसरा हाथ चौहान के रिवॉल्वर वाले हाथ की कलाई पर जम गया।

काले साये ने एक झटका दिया और चौहान के हाथ से

रिवॉल्वर गिरा दिया—फिर वह हाथ छोड़ दिया'''और बांयें हाथ को उसने ऊपर उठा दिया'''एक हाथ पर उसने चौहान के भारी भरकम शरीर को गुड्डे की तरह लटका दिया।

चौहान हाथ पैर पटक रहा था—उसके मुंह से घों-घों की आवाज निकल रही थी—उसकी आंखें दम घुटने से बाहर को उबल आयी थीं।

काला साया उसे एक हाथ पर तब तक लटकाये रहा जब तक चौहान छटपटाता रहा—फिर जब उसका शरीर निर्जीव हो गया तो उसने वह लाश फेंक दी—और नीचे झुककर उसके कपड़ों की तलाशी लेने लगा'''एक ओर पड़ी पैन्सिल टार्च धीरे-धीरे हिल रही थी उसकी रोशनी काले साये पर पड़ रही थी—जो हिलती हुई बड़ी भयावह लग रही थी।

□ □
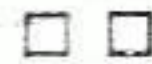
काला साया उस लाश को लादे हुए लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ उसी पगडण्डी पर चला जा रहा था—जिस पर उसने चौहान को लाश में बदल दिया था।

सहसा रात के खौफनाक सन्नाटे को चीरती हुई भेड़िये की-सी गुर्राहट भरी तेज आवाज गूंजी—आवाज को सुनते ही काला साया उछला'''और फिर ऐसा लगा जैसे काले साये के पैरों में बिजली समा गई हो—वो लम्बी-लम्बी छलांगे लगाता हुआ आवाज की दिशा में दौड़ने लगा'''अन्धकार में भी वह अपना रास्ता देख रहा था—वह अब तक न किसी झाड़ी में उलझा था न ही ठोकर खाकर गिरा था।

भेड़िये की आवाज के शांत होते ही चारों ओर पहले जैसा सन्नाटा छा गया।

पगडण्डी पूर्व दिशा में घूम रही थी—काले साये ने जैसे ही

मोड़ काट कुछ ही दूरी पर उसे हल्की-सी रोशनी नजर आयी जैसे कोई लालटेन हिलाकर उसे अपनी ओर बुला रहा हो।

काला साया कुछ ही छलांगों में रोशनी के पास पहुंच गया—जहां एक नकाबपोश हाथ में लालटेन लिए खड़ा था।

मगर तभी नकाबपोश के पीछे से दो नकाबपोश निकले और पलक झपकते ही वो काले साये पर कूद गये।

काले साये को स्वप्न में भी ऐसी उम्मीद न थी कि यहां उसका किसी से टकराव होगा—फलस्वरूप वह उछलकर दूर जा गिरा—उसके कन्धे पर लदी लाश उछलकर निकट की झाड़ियों में जा गिरी।

मगर दूसरे ही क्षण काला साया बन्दर की तरह उछलकर खड़ा हो गया और घायल चीते की तरह गुर्रा उठा—"कौन हो तुम···?"

"तेरे बाप के बाप।" जमीन से खड़े होते हुए दोनों नकाबपोशों में से एक बोला।

"यानि उस्तादों के उस्ताद···।" दूसरे नकाबपोश ने कहा।

तीसरा नकाबपोश जो डील-डौल में काले साये के ही समान था वो थोड़ा पीछे हट गया था जैसे वह उस युद्ध को देखने की लालसा रखता हो जो उसके सामने होने जा रहा था।

"ब्लैक नॉट कहां है···?" काला साया हिंसक स्वर में गुर्राया।

"कोबरा की शरण में···।" तीसरा नकाबपोश बोला जो लालटेन लिए खड़ा था—और उसकी पैनी निगाहें काले साये के चेहरे पर जम गईं···यह देखने के लिए कि 'कोबरा' का नाम सुनते ही काला साया हड़बड़ा कर दो कदम पीछे रह गया था।

काले साये के मुंह से कांपता-सा स्वर निकला—"क···कोबरा···क्या त···तुम···कोबरा···?"

"नहीं, मैं कोबरा नहीं—लेकिन क्या तुम इस खंजर को पहचानते हो?" लालटेन वाले नकाबपोश ने कहा और लालटेन की रोशनी में उसने अपना हाथ खोल दिया जिसमें हाथी दांत की मूठ का बना खंजर चमक रहा था।

"य···ये तुम्हारे पास कहां से आया···?"

"ब्लैक नॉट से मिला—और ब्लैक नॉट हमारे कब्जे में है···?"

"ल···लेकिन तुमने तो कहा कि वह कोबरा के कब्जे में है।" यह कहते ही काले साये का शरीर तन गया—उसे सावधान होते देख—उसके अगल-बगल खड़े दोनों नकाबपोशों के शरीरों में भी खिंचाव आ गया।

मगर तभी लालटेन वाला नकाबपोश बोल उठा—"लेकिन किसी भी समय वो लाल बंगले पर पहुंच सकता है।"

यह सुनते ही काले साये का जिस्म ढीला पड़ गया—मानों वह बिना लड़ाई किए ही हार मान चुका हो।

नकाबपोश ने अपने हाथ में थमा खंजर दूसरे नकाबपोश की ओर उछाल दिया और बोला—"ब्लैक नॉट और यह खंजर दो ऐसे सबूत हैं कि तुम कोबरा के मुजरिम हो—और कोबरा अपने मुजरिमों को कहीं जीवित नहीं छोड़ता—इसलिए अगर तुम चाहते हो कि यह दोनों सबूत कोबरा को न मिलें तो तुम्हें वह करना होगा जो तुम ब्लैक नॉट के लिए कर रहे थे—यानि तुम्हें मेरा साथ देना होगा—मैं ब्लैक नॉट बनकर कोबरा के पास तुम्हारे साथ चलूंगा—और हमारे साथ होगी चौहान की लाश—जिसे देखते ही कोबरा खुश हो जाएगा।"

इतना सुनते ही काला साया लड़खड़ा कर बैठ जाने के लिए मजबूर हो गया—वह हार मान चुका था—और उसकी हार इस बात का सबूत थी कि वह लालटेन वाले नकाबपोश की हर बात मानने के लिए तैयार है।

"तुम चौहान की लाश निकालो···।" लालटेन वाले नकाब-

पोश ने अपने साथी नकाबपोश से कहा।

दोनों नकाबपोश उन झाड़ियों में घुस गए जिनमें चौहान की लाश काले साये के कन्धे से उछल कर गिरी थी।

कुछ देर झाड़ियों में खड़खड़ाहट-सी होती रही—फिर बड़ी तेजी से दोनों नकाबपोश झाड़ियों में से निकले और एक साथ बोल उठे—"लाश नहीं है…?"

"क्या…?" लालटेन वाला नकाबपोश चौंककर उछल पड़ा।

"जी…लाश नहीं है…?"

"इसका मतलब कोई और भी यहां था—तुम लोग फौरन वापस जाओ—मैं इसके साथ जाता हूं—कोबरा के पास पहुंचते ही तुम्हें खबर दूंगा—चलो डोंगा—।" लालटेन वाले नकाबपोश ने फूंक मार कर लालटेन बुझा दी—और काले साये का हाथ थाम लिया—जिसे उसने डोंगा के नाम से सम्बोधित किया था।

□ □

चन्दू-दीपू के सामने इस समय एक नकाबपोश कुर्सी पर बैठा था जिसे कुर्सी से रस्सी से बांध दिया गया था—नकाबपोश की सहमी हुई निगाहें चन्दू-दीपू पर थीं।

"भाई चन्दू।" दीपू नकाबपोश की आंखों में झांकता हुआ बोला।

"कहो भाई दीपू।" चन्दू ने कहा।

"मेरी इच्छा हो रही है कि मैं अपने सामने बैठी दुल्हन का घूंघट उठा दूं।"

"अपनी इच्छा को कभी मारना नहीं चाहिए भाई दीपू।" चन्दू ने कहा—"उठाओ घूंघट और दुल्हन के दर्शन करो।"

"ठीक है।" दीपू आगे बढ़ा—और उसने नकाबपोश का नकाब उतार लिया।

नकाब के हटते ही जो चेहरा इन्हें नजर आया उसे देखते ही दोनों उछल पड़े।

"कुमार…।" दोनों के मुंह से एक साथ निकला।

कुर्सी पर बैठा व्यक्ति कुमार ही था—जिसे चौहान ने राय के साथ भेजा था।

"क्यों प्यारे तुम तो राय के साथ चले गये थे…।" चन्दू ने हैरानी से पलकें झपकाते हुए पूछा।

कुमार भी चौंके बिना न रह सका—उसने दोनों की ओर देखा—और बोला—"तुम्हें कैसे मालूम ?"

"हम उस समय वहीं थे।" दीपू ने कहा।

"लेकिन तुम हो कौन और तुम्हारा सम्बन्ध किस दल से है…?" कुमार ने पूछा।

"प्यारे लाल—हम जो भी हैं तुम्हारे सामने खड़े हैं—इसका नाम दीपू है—और मेरा नाम चन्दू—हमारा जो दल है—वह देश-भक्तों की एक टीम है—जिसका काम है मुजरिमों को कानून के हाथों में पहुंचाना…।"

"हमारे बारे में तुम्हें मालूम कैसे हुआ ?" कुमार ने पूछा।

"दुनिया गोल है प्यारे…उसी गोलाई पर घूमते हुए हम वहां पहुंच गए जहां तुम राय का अपहरण करके ले गए थे—राय प्राचीन भाषाओं को समझाने का विशेषज्ञ है—हमें सूचना मिली थी कि राय का अपहरण होने वाला है—तब हम वहां पहुंच गए—तुम लोगों को राय का अपरहण करने की जरूरत नहीं पड़ी—उसने हमारे कहने पर तुम्हारी हर बात मान ली और तुम्हारे साथ चल दिया—हम राय के पीछे जंगल वाले मकान तक पहुंचे—लेकिन ये समझ में नहीं आया कि तुम तो राय के पीछे गए थे फिर हमारे हाथ कैसे लग गए।"

"ये मैं नहीं बता सकता…।"

"नहीं भाई ऐसा मत कहो।" दीपू बड़े भोलेपन से बोला—

"क्योंकि तुम खुद ही कुछ देर बाद बता डालोगे···।"

"मैं नहीं बताऊंगा।" कुमार ने दृढ़ता से कहा।

"ओह···! कुमार साहब छोटों की बात भी मान लिया करते हैं—हमें आपस में लड़ना-भिड़ना नहीं चाहिए।"

कुमार दीपू की बात सुनकर और ज्यादा फैल गया—"तुम मेरे मुंह से कुछ भी नहीं उगलवा सकते···।"

"मगर अब तक तो तुम उगल रहे थे।"

"जो बात बताने वाली थी मैंने बता दी—मगर अब कुछ नहीं बताऊंगा।"

"भाई चन्दू···।" दीपू ऐसे बोला जैसे कुमार के इन्कार करने पर उसके दिल को जबरदस्त आघात लगा हो।

"मैं समझ रहा हूं भाई दीपू—।" चन्दू ने कहा—"अब तुम पूछताछ की बागडोर मेरे हाथों में सौंपना चाहते हो।"

"मैं मजबूर हूं—क्योंकि मैं ठहरा शान्ति विभाग का सदस्य और तुम हो कसाई विभाग के सदस्य—यह मामला मैं तुम्हारे विभाग को सौंपता हूं—कृपया चार्ज सम्भालिए···।" दीपू ने कहा और दो कदम पीछे हट गया।

चन्दू आस्तीन चढ़ाता हुआ दो कदम आगे आया और बोला—"कसाई विभाग का पहला नियम है—अपने मामले को अपने दुर्लभ उपकरण दिखाकर समझाया जाए इसलिए मैं तुम्हें कुछ उपकरण दिखाता हूं।" कहकर चन्दू अलमारी की ओर बढ़ा—अलमारी खोलकर सबसे पहले उसने डेढ़ फिट लम्बा एक काले रंग का गोल डण्डा निकाला—और उसे रूमाल से साफ किया—फिर कुमार के सामने आकर बोला—"इस उपकरण का अशुभ नाम कालूराम है—इनका काम है उंगलियां तोड़ना—ज्यादातर ये अलमारी में ही रहते हैं—लेकिन जब इन्हें बाहर आने का आदेश मिलता है तो बाहर की गर्मी में परेशान हो उठते हैं—तब इन्हें सम्भालना मुश्किल हो जाता है···क्या मैं तुम्हें इनके काम का नमूना दिखाऊं।"

चन्दू ने कुमार की ओर देखा।

कुमार ने होंठों पर जीभ फेरी—उसकी आंखों में आश्चर्य और भय के मिले-जुले भाव थे—उसने इन्कार में सिर हिला दिया।

मगर तभी चन्दू का हाथ लहराया और डण्डे की करारी चोट कुमार के दाएं हाथ की उंगलियों पर पड़ी।

कुमार दर्द से बिलबिला कर चीख उठा—निश्चित था कि उसके हाथ की पांचों उंगलियों में से दो-तीन की हड्डी टूट गई हो।

कुमार असहनीय दर्द से बिलबिला रहा था जबकि चन्दू अपने उपकरण को वापस अलमारी में रखने जा रहा था। उसे रख कर चन्दू ने एक ब्लेड निकाला और कुमार की तरफ आते हुए बोला—"इसका नाम है—सफाचट सिंह—इसका काम है सफाचट करना।" कहने के साथ ही चन्दू ने हाथ घुमाया और ऐसा लगा जैसे वह कुमार का शरीर ब्लेड से चीर डालेगा—इसी आशंका से कुमार चीख उठा—तभी चन्दू का हाथ उसके शरीर पर रगड़ खाता हुआ घूम गया—और चर···र्···र—की आवाज फैलती चली गई।

कुमार के शरीर पर जो काला लबादा था—और लबादे के भीतर जो शर्ट थी वह फट गई—और उसका ऊपर का शरीर नंगा हो गया।

"देखो इसकी करामात।" चन्दू ब्लेड दिखाते हुए बोला—"ये अपने काम में इतना निपुण है कि शरीर को हानि पहुंचाये बिना सफाचट कर देता है।"

कहने के साथ ही चन्दू ब्लेड अलमारी में रखने चला गया और इस बार उसने जो चीज निकाली वो लगभग तीन फिट लम्बा चमड़े का हन्टर था।

चन्दू हन्टर फटकारता हुआ उसके सामने आया और बोला—

"इसका नाम है सटाक राम—और इनका काम है—हवा में घूम कर एक ऐसी आवाज पैदा करना जिसके बाद एक चीख उभरे…।" कहने के साथ ही चन्दू का हाथ पूरी शक्ति से घूमा…कुमार की छाती पर हन्टर सटाक की आवाज से पड़ा और चिपक गया।

कुमार के मुंह से एक करुणा भरी चीख उभरी जैसे उसके शरीर को पैने हथियार से चीरा जा रहा हो।

चन्दू ने धीरे से हण्टर को झटका दिया—हन्टर का कुछ हिस्सा हट गया—लेकिन हटते हुए उसने कुमार की छाती का थोड़ा-सा मांस नोंच लिया—कुमार की चीखें क..रे में गूंज रही थीं—।

चन्दू ने दूसरा झटका दिया और हन्टर खींच लिया—।

कुमार की छाती पर एक लम्बी लकीर बन गई थी—ऐसा लगता था जैसे किसी ने बड़ी सफाई से कुमार की छाती पर पैने औजार से मांस काटकर एक रेखा खींची हो।

घाव से खून बहकर छाती पर नीचे की तरफ छोटी-छोटी सुर्ख रेखाएं बना रहा था।

कुमार की चीखें अब रुकने वाली नहीं थीं—वो समझ चुका था कि उसे भयानक ढंग से शारीरिक और मानसिक रूप से टार्चर किया जा रहा हो।

चन्दू हण्टर अलमारी में रखकर पीछे मुड़ा तो उसके हाथ में एक डिबिया थी—डिबिया लेकर वह कुमार के सामने आया और बोला—"इस डिबिया का नाम है चटपटी देवी—इनके दो सेवक हैं—एक का नाम है, मिर्च सिंह—दूसरे का नाम है नमक सिंह—दोनों अपने काम में माहिर हैं—इनके अन्दर पैदायशी गुण यह है कि ये तरकारी में पहुंचकर—उसे स्वादिष्ट बनाते हैं—और उस स्वाद का नाम होता है—चटपटा…या चटपटी—लेकिन यही दोनों अगर घाव में घुस जाएं तो इनका जवाब नहीं—घाव में पहुंचते ही ये जो चीज बनाते हैं उसका नाम हमारे बुजुर्गों ने 'दर्द-नाक चीखें' रखा है—इनका सेवन करते ही मुंह से निकलता है—

हाय मर गया।"

कहने के बाद चन्दू ने डिबिया खोली और उसमें भरे नमक और मिर्च के मिक्चर को चुटकी में भर लिया फिर अपना हाथ आगे बढ़ाया।

कुमार कुर्सी पर बुरी तरह मचला—घाव में नमक-मिर्च लगने की कल्पना करके उसके शरीर पर रोंगटे से खड़े हो गए—आंखें भय से फट गईं—वह चिल्ला पड़ा—"न…नहीं…नहीं…इसे दूर रखो…भगवान के लिए इसे दूर रखो…मैं मर जाऊंगा…।"

"शर्मा हमें बना रहे हो—।" चन्दू आंखें मटकाकर बोला—"तुम जैसे सिंह को नमक और मिर्च भला कैसे मार सकते हैं—तुम्हें मारने के लिए चाकू चन्द या रिवॉल्वर राम चाहिए—नमक सिंह और मिर्च सिंह तो बेचारे बड़े शरीफ पदार्थ हैं—अगर दुनिया में ये न होते तो कोई स्वाद ही न रहता।"

"नहीं—इसे मेरे घाव में मत लगाना।" कुमार चीखा।

"मगर क्यों न लगाऊं—मैं कसाई विभाग का सदस्य हूं—मेरा काम मेरी मर्जी पर होता है…।"

'न…नहीं…नमक…नहीं…मैं मर जाऊंगा…।" कुमार बुरी तरह छटपटा कर चीखा।

"तो शान्ति विभाग के सदस्य को उनके प्रश्नों का जवाब दो…।" चन्दू ने कहा और दीपू की ओर इशारा किया।

"ठ…ठीक है पूछो…?" कुमार ने घबरा कर कहा—और गले में अटका हुआ थूक निगला।

□ □

सुनसान सड़क पर वह काली स्टेशन वैगन तेज रफ्तार से दौड़ी जा रही थी—वैगन के पिछले हिस्से में दो व्यक्ति थे और

उनके पैरों के पास लकड़ी की एक बड़ी पेटी रखी थी। अगले केबिन में अकेला ड्राइवर था और इस समय उसका पूरा ध्यान स्टीयरिंग पर था—उसकी जरा-सी चूक वैगन को सड़क के दायीं ओर बह रहे बीसियों फिट गहरे और चौड़े नाले में ले जा सकती थी।

वैगन के इंजन की आवाज रात के सन्नाटे को भंग कर रही थी और वैगन के पिछले केबिन में बैठे व्यक्ति इंजन की आवाज को भेद रहे थे—"कालिया रोजी से तुमने पूरी बात कर ली थी न···?"

"हां—उसने तुम्हारा नाम लिया था—कह रही थी—टॉम को कह देना कोबारा से ये न कहे कि मेरे पास रॉकी आया था।"

"रोजी गलत कर रही है—वो कोबरा को नहीं जानती अगर उसे पता चल गया कि रोजी रॉकी से मिलती-जुलती है—तो वह उसे मरवा डालेगा—रॉकी एक नम्बर का कमीना आदमी है—वो अपना मतलब निकालकर उससे अलग हो जाएगा—सच ये है मैं रोजी से प्यार करता हूं—इसलिए नहीं चाहता कि वह किसी मुसीबत में फंसे।"

"तुम्हें उससे अलग हो जाना चाहिए टॉम अगर तुम अपनी खैर चाहते हो—देर-सवेर कोबारा को पता चल ही जाएगा कि वह रॉकी से मिलती है—और तुम रोजी से मिलते हो।"

"मैं उसे समझाना चाहता हूं।"

"मुश्किल है टॉम—वह नहीं समझ सकती—उसे न तुमसे प्यार है न रॉकी से—उसे सिर्फ दौलत से प्यार है—वो कोबरा को भूलाकर जबरदस्त धोखा खा रही है।"

"इसीलिए कहता हूं उसे भूल जाओ—कोबरा इस बार हमें किसी लम्बे मिशन पर भेजना चाहता है—उसने वायदा किया है कि अगर उसका यह मिशन सफल हो गया तो वह हमें रिंग लीडर बना देगा—उसके बाद हम मैदान से हट जाएंगे—हमारा काम करने

वालों का अलग ग्रुप होगा—और हम कोबरा के अण्डर में होंगे—खतरे हमारे लिए न के बराबर रह जाएंगे—जैसे कोबरा के बारे में कोई नहीं जानता—वैसे ही हमारे बारे में कोई नहीं जान सकेगा।"

टॉम की बात समाप्त ही हुई थी कि वैगन एक झटके से रुक गई—ड्राइवर ने अगर अचानक मोड़ पर ब्रेक न दबा दिए होते तो मोड़ पर खड़ी कार से वैगन टकरा गई होती।

वैगन के रुकते ही ड्राइवर ने पिछले और अपने केबिन के बीच की दीवार में बनी छोटी-सी खिड़की का शटर हटाया और मुंह अन्दर करके जल्दी से बोला—"सावधान···! किसी ने हमारा रास्ता रोक लिया—धांय···।"

ड्राइवर का वाक्य पूरा होने से पहले ही गोली चलने का एक जोरदार धमाका हुआ—और वैगन के एक शीशे को तोड़ती हुई गोली पिछले केबिन की दीवार से टकराकर बेकार हो गई।

पलक झपकते ही टॉम—और कालिया के हाथ में रिवॉल्वर आ गए—कालिया ने फुर्ती से वैगन का दरवाजा खोला और बाहर के अन्धकार में कूद गया—उसके पीछे ही टॉम ने छलांग लगाई।

बाहर आने के बाद दोनों वैगन के पास ही सड़क पर लेट गए थे—दायीं ओर का शीशा टूटा था—इसलिए यह तो पता चल गया कि दायीं ओर नाले की ओर से गोली चली है—लेकिन उन्हें नाले की ओर कोई भी साया नजर नहीं आ रहा था।

तभी—"ठक!" की आवाज से कोई चीज उनके सामने गिरी सड़क पर गिरने के बाद वह इनकी ओर लुढ़की और सहसा ही एक धमाके से फट गई।

धमाका इतना तेज न था कि कालिया और टॉम को कोई क्षति पहुंचती···लेकिन धमाके के साथ धुएं का एक तेज बवण्डर-सा उठा जिसने कुछ ही क्षणों में वैगन को अपने घेरे में ले लिया इसके साथ ही एक अपरिचित आवाज गूंजी—"वैगन पर कब्जा करो और भाग निकलो—!" इसके साथ ही वैगन के दरवाजे के

पास एक धमाका हुआ—यह पहले की तरह धुंवें के बम का धमाका था।

धुआं इतना गाढ़ा था कि कालिया और टॉम कुछ भी नहीं देख पा रहे थे—इस बीच ढेर सारा धुवां उनके मुंह में चला गया था—धुएं ने अपना असर दिखाया और दोनों ने खांसना शुरू कर दिया।

तभी ड्राइवर की चीख उभरी—जैसे उस पर किसी ने घातक हमला करके चोट पहुंचाई हो।

टॉम खांसते हुए बोला—"कालिया वैगन के टायर बेकार करने की कोशिश करो—मैं वैगन के दरवाजे की ओर बढ़ता हूं—।" कहने के साथ ही टॉम ने अनुमान से वैगन के दरवाजे की ओर फायर किया मगर जवाब में कोई चीख न उभरी।

टॉम बुरी तरह खांसता हुआ अनुमान के सहारे वैगन के दरवाजे की ओर बढ़ा—और तभी उसकी छाती में एक जोरदार ठोकर लगी—जिसने टॉम को पीछे उछाल दिया—टॉम खांसता हुआ चीखा और धड़ाम से सड़क पर जा गिरा—गनीमत इतनी रही कि उसका सिर या चेहरा सड़क से नहीं टकराया—वह पीठ की तरफ से सड़क पर गिरा था।

तभी एक धमाका हुआ—और धमाके के साथ ही कालिया की आवाज गूंजी—"टॉम—मैंने टायर बेकार कर दिया है—तुम दरवाजे पर डटे रहना मैं आ रहा हूं···।"

उसी समय एक नई आवाज उभरी—"भागो—वैगन का टायर फट चुका है दरवाजे पर वे दोनों हैं—भागो···।"

आवाज की दिशा में टॉम ने कई फायर किए मगर चीख एक भी न उभरी—कालिया ने भी फायर किए—उनका जवाब कुछ भी न मिला।

इसके साथ ही सड़क पर भागते कदमों की आहटें आने लगीं—फिर वैगन के आगे खड़ी कार के इंजन का स्वर उभरा—।

कुछ क्षणों में उन्हें अन्दाजा हो गया कि कार जा रही है—उसकी आवाज धीरे धीरे-धीमी होती हुई गायब हो गई।

टॉम की आवाज उभरी—"वे भाग गए कालिया···?"

"मालूम नहीं पड़ा कि टॉम वे कौन थे···?"

"वह जो भी थे वैगन का अपहरण करने आये थे—ड्राइवर को देखो—कहीं हरामजादे उसे खत्म तो नहीं कर गये···।"

धुवां अब काफी हल्का हो चुका था—कालिया उठकर ड्राइवर की ओर आया—दूसरी तरफ से टॉम भी आया।

ड्राइवर अपनी सीट पर बेहोश पड़ा था उसके सिर से खून बह रहा था जो उसकी कनपटी को रंगता हुआ बालों के नीचे गरदन तक बह आया था। कालिया ने उसकी नब्ज टटोली जो चल रही थी।

"यह जीवित है।" कालिया ने कहा।

"पेटी भी होनी चाहिए।" टॉम ने कहा—"मैंने उन्हें दरवाजे तक आने नहीं दिया था—जरूर वे उसी पेटी के चक्कर में आये थे···।"

"ड्राइवर को बेहोश करने के बाद वे वैगन ले भी जाते अगर मैंने वैगन के टायर को बर्स्ट न कर दिया होता···।" कालिया ने कहा।

टॉम पीछे आया—दरवाजा खुला हुआ था और पेटी अपने स्थान पर मौजूद थी।

टॉम ने एक गहरी सुख की सांस खींची—सब कुछ ठीक था—।

कालिया ने भी पेटी को देखा···और बोला—"मैं जब तक हुलिया बदलता हूं तुम तैयार रहना···। हो सकता है वे फिर आ जायें—।"

"ड्राइवर को तो आधे घण्टे से पहले होश आने से रहा—ड्राइविंग भी तुम करोगे कालिया—।"

"ओ० के०···।" कालिया ने कहा और स्टैपनी निकालने अन्दर चला गया।

टॉम नाले के किनारे तक गया—नाले में तेज बहाव से पानी बह रहा था—वहां किसी एक आदमी के पैरों के निशान थे—जो टॉम को काफी गौर से देखने पर नजर आये···।

□ □

डोंगा के साथ वह नकाबपोश था जिसने डोंगा से कहा था कि मैं ब्लैक नॉट बनकर तुम्हारे साथ चलूंगा···।

इस समय वे एक लम्बे-चौड़े हॉल में खड़े थे—उनके सामने ऊंचे स्थान पर एक सिंहासननुमा कुर्सी रखी थी—कुर्सी की पुश्त पर एक लोहे की रॉड लगी हुई थी—जिसके ऊपरी सिरे पर लाल बल्ब लगा था—जो इस समय स्पार्क कर रहा था।

सहसा कुर्सी के पीछे की दीवार का कुछ हिस्सा···तेज मशीनी आवाज के साथ जमीन में धंस गया और वहां एक आदमकद दरवाजा नजर आने लगा—। इसके एक क्षण बाद ही कमरे में अन्धकार छा गया—कुर्सी पर लगा लाल बल्ब बुझ गया और दरवाजे के स्थान पर लाल रोशनी का पर्दा-सा गिर गया जिस पर काले अक्षरों में लिखा था—"कोबरा—।"

फिर एक क्षपाके के साथ वह लाल रोशनी भी गायब हो गई और कमरे में एक धीमी गुर्राहट गूंजने लगी—मानों कोई भेड़िया अपने शिकार को सामने देखकर गुर्रा रहा हो···कुछ क्षण वह गुर्राहट गूंजती रही—फिर सहसा ही पूरे कमरे में तेज रोशनी फैल गई—।

डोंगा और नकाबपोश तेज रोशनी के कारण आंखें बन्द करने के लिए मजबूर से हो गए थे—कुछ क्षण बाद धीरे-धीरे दोनों ने आंखें खोलीं और सबसे पहले जिस पर उनकी निगाह पड़ी वह था

कोबरा···। सिंहासननुमा कुर्सी पर बैठा था एक लम्बे कद का नकाबपोश जिसका पूरा शरीर काले लबादे से ढका हुआ था—हाथों पर लाल दस्ताने थे—और काले नकाब में से उसकी अंगारे के समान दहकती आंखें नजर आ रही थीं—उसकी बांयी ओर फर्श पर एक खूंखार काला भेड़िया बैठा था—वह धीमी गुर्राहट उसके मुंह से ही निकल रही थीं—लेकिन उजाला होने के साथ ही उसने गुर्राना बन्द कर दिया था—और अब उसकी चमकीली लाल-लाल आंखें डोंगा और उसके साथ खड़े नकाबपोश को घूर रहीं थी।

दोनों ने आदर से सिर झुकाकर सिंहासन पर बैठे कोबरा का अभिवादन किया—।

"ब्लैक नॉट···।" कोबरा के मुंह से खरखराती-सी आवाज निकली—"तुम खाली हाथ लौटे हो···?"

"महान कोबरा—काम तो हम पूरा कर चुके थे—लेकिन उसका सबूत न ला सके···।"

"तुम तो जानते हो ब्लैक नॉट कि हम हर काम का सबूत चाहते हैं।"

"क्षमा करें महान कोबरा—जब हम अपना काम कर चुके तब अचानक ही न जाने कहां से तीन नकाबपोश आ धमके—हमारे हाथ से चौहान की लाश निकल गई—मजबूरी में लाश का ख्याल छोड़कर हमें उन नकाबपोशों से भिड़ना पड़ा—फिर अचानक ही वे नकाबपोश भाग निकले डोंगा ने उनका पीछा भी किया लेकिन जंगल में अंधेरे ने उनका साथ दिया—वे निकल भागे—डोंगा निराश वापस लौटा—इधर जब मैंने उन झाड़ियों में देखा जहां चौहान की लाश गिरी थी तो—वहां लाश नहीं थी—तब हम बिना सबूत वापस लौटने के लिए मजबूर हुए—हमारी इस बात का विश्वास आप इस चीज से लगा सकते हैं जो हम अपने साथ लाये हैं।" कहने के साथ ही नकाबपोश ने जेब में हाथ डाला और कागज में लिपटी हुई कोई चीज बाहर निकाली।

"यह वह असली तख्ती है जिस पर सूनी घाटी के खजाने का नक्शा है—इसे चौहान ने अपने साथियों से छिपाकर अपने पास रख लिया था और उसके स्थान पर नकली तख्ती रख दी थी—जब डोंगा ने चौहान को खत्म कर दिया था—तब यह तख्ती उसकी जेब से मिली थी।" यह कहकर नकाबपोश ने उस तख्ती को एक कदम आगे बढ़कर फर्श पर रख दिया—और फिर एक कदम पीछे हटकर अपने स्थान पर आ गया।

कोबरा के मुंह से एक महीन सीटी की-सी आवाज निकली जिसे सुनते ही उसके पास बैठा भेड़िया खड़ा हो गया—और एक छलांग में फर्श पर रखी तख्ती के पास पहुंचकर उसने कागज में लिपटी तख्ती अपने मुंह में दबा ली—और दूसरी छलांग में वह कोबरा के सामने पहुंचकर पिछले दोनों पैरों पर खड़ा हो गया और अपना मुंह कोबरा की ओर उठा दिया।

कोबरा ने तख्ती उसके मुंह से निकाल ली—भेड़िया अपने स्थान पर जा बैठा—और कोबरा ने तख्ती पर लिपटा कागज हटा दिया।

"शाबाश!···ब्लैक नॉट···तुमने एक शानदार सबूत पेश किया है—और डोंगा हम तुम्हारी भी तारीफ करते हैं—यह तख्ती वास्तव में असली है—और इस काम के बदले में हम तुमको इनाम देंगे···।"

कहने के साथ ही कोबरा ने कुर्सी के दांयें हत्थे पर हाथ मारा—।

"खट।" एक झटके से फर्श का वह हिस्सा अपने स्थान से हट गया जहां नकाबपोश और डोंगा खड़े थे—दोनों के मुंह से एक चीख निकली और चीख के साथ ही उनके लहराते हुए जिस्म नीचे गिरते चले गये।

इसके साथ कोबरा का मक्कारी भरा अट्टहास गूंज उठा—और कोबरा ने कुर्सी के बांये हत्थे पर हाथ मारा जिससे—खट—

आवाज हुई और फर्श में बना हुआ दरवाजा बन्द हो गया—जिसमें नकाबपोश और डोंगा समा चुके थे।

□ □
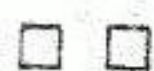
कोबरा का क्रूर अट्टहास अभी रुका भी न था कि कमरे की दीवार में लगा एक लाल बल्ब स्पार्क करने लगा—जिसके साथ एक छोटा-सा स्पीकर भी लगा हुआ था।

कोबरा ने स्पार्क करते लाल बल्ब को देखा और अपनी कुर्सी के हत्थे में लगा एक गुप्त बटन दबाया—बटन के दबते ही बल्ब बुझ गया—और कमरे में कोबरा की गुर्राहट-भरी आवाज गूंज उठी—"नम्बर जैड—क्या कहना चाहते हो···?"

"महान कोबरा···।" दीवार में लगे स्पीकर से आवाज निकली—"टॉम और कालिया आए हैं?"

"उन्हें यहां भेज दो—वो जो सामान लाये हैं उसे भी भेज देना—और जब वह यहां पहुंच जायें—दरवाजे लॉक कर देना—क्योंकि उन्हें दुबारा बाहर नहीं जाना है—वो हरामजादे नाकारा—एक अकेला आदमी उन्हें बेवकूफ बना गया—और वो समझ रहे हैं कि हम उनके सिर पर कामयाबी का ताज रखेंगे···!" कहने के साथ कोबरा ने कुर्सी के हत्थे पर लगा दूसरा बटन दबाया—और भेड़िये की गरदन के बालों को सहलाने लगा।

कुछ देर बाद एक तरफ की दीवार मशीनी आवाज के साथ हटी—और कमरे में टॉम घुसा जिसने लकड़ी का एक बक्सा उठाया हुआ था—उसके साथ कालिया था—जैसे ही वे अन्दर आए दीवार फिर से अपने स्थान पर आ गई।

कालिया ने सिर झुका कर कोबरा का अभिवादन किया—टॉम ने पेटी फर्श पर रखने के बाद सिर झुकाया—और तभी भेड़िये की धीमी गुर्राहट गूंज उठी।

इस समय कोबरा की सुर्ख आंखों में विषैली चमक दौड़ र
थी—टॉम और कालिया में इतना साहस नहीं था कि वे कोब
की आंखों में देखते और अनुमान लगाते कि अब क्या होने वाला है

"महान कोबरा—रोजी से हम ये बक्सा ले आए हैं।" ट
ने कहा।

"रास्ते में कोई गड़बड़ तो नहीं हुई—टॉम।"

"न···नहीं···महान कोबरा।"

"और रोजी ने क्या कहा ?"

"उसने कहा माल निकालने में बहुत मुश्किल आयी—रो
ने कल यहां आने के लिए कहा है ?"

"अच्छा···!" कोबरा ने विचित्र अन्दाज में सिर हिलाया—
"क्या रोजी ने ये नहीं कहा कि आजकल वह रॉकी का काम कर
ज्यादा पसन्द करती है—लेकिन हां टॉम तुम क्यों कहोगे—
आखिर तुम रोजी के सच्चे आशिक हो···?"

कोबरा के इस रहस्योद्घाटन ने टॉम और कालिया को ह
बड़ा दिया—पल-भर में ही उनके चेहरे की रंगत बदल गई—
ऐसा पीलापन चेहरे पर फैल गया मानों वे महीनों से बीमार हों

"म···महान कोबरा···द···दरअसल उसने कहा जरूर था—
लेकिन—लेकिन हम आपको बताने ही वाले थे···।" टॉम ह
लाया-सा बोला।

"अच्छा···अच्छा···। मैं तो भूल ही गया था कि तुम दो
को अभी एक मिशन पर जाना है—जहां से लौटते ही मैं तुम्हें रि
लीडर बना दूंगा···और तगड़ा इनाम दूंगा—इसलिए तुम मुझ
गद्दारी तो कर ही नहीं सकते।"

टॉम और कालिया को समझते देर नहीं लगी कि वैगन
बैठ कर उन्होंने जो बातें की थी—वह सब की सब कोबरा के का
तक पहुंच गई हैं—शायद वैगन में कोई गुप्त माइक्रोफोन लग
हुआ था···।

"ह···हमें क्षमा करें बॉस···।" सहसा ही टॉम और कालिया
फर्श पर घुटनों के बल बैठ गए उनकी आंखों में याचना थी।

"ठीक है···टॉम···कालिया···हमने तुम दोनों का यह अप-
राध क्षमा कर दिया कि तुमने हमसे ज्यादा वफादारी रोजी पर
जताई—तुम हमारे पुराने सेवक हो और हमारा हर काम तुमने
बखूबी किया···अब इस पेटी को खोलो···लेकिन ठहरो···जानते
हो इस पेटी में क्या है ?"

"न···नहीं···महान कोबरा—हमने यह देखने की कोशिश
नहीं की···।" कालिया ने कहा।

"हम जानते हैं···कि तुम ऐसा नहीं कर सकते···कोबरा के
सामान को देखने का साहस किसी में नहीं है—इसलिए हम तुम्हें
बता देते हैं कि इस पेटी में चार करोड़ के हीरे थे—और एक प्राचीन
मूर्ति थी—जिसका सौदा हमने अमरीका के एक अरबपति से एक
करोड़ में किया था—कुल मिलाकर इस पेटी में पांच करोड़ का
माल है—जिसे हम आज ही कैश कर लेंगे—सोचो···पांच करोड़
कितनी बड़ी दौलत होती है—क्या इसे कोई यूं ही छोड़ सकता
है—वह भी तुम जैसे आदमियों के भरोसे-जिन्होंने साबित कर
दिया कि वह रोजी के वफादार है कोबरा के नहीं ?"

"म···मैं···आपके हुक्म पर रोजी को गोली मार सकता हूं
महान कोबरा···।" कालिया गले का थूक सटकता हुआ हकलाता-
सा बोला।

"क्यों नहीं कालिया—रोजी तुम्हारी नहीं टॉम की महबूबा
है—क्यों टॉम···क्या तुम रोजी को गोली मार सकते हो ?"

टॉम कोई जवाब न दे सका—धीरे से उसने अपना सिर
नीचे झुका लिया।

"हा···हा···हा···।" कोबरा का जोरदार अट्टहास कमरे में
गूंज उठा—।

"टॉम···।" कोबरा अट्टहास को ब्रेक लगाते हुए गर्जा—

"तुम्हें रोजी को गोली मारनी होगी अगर तुम उसे तड़फ-तड़फ कर मरते नहीं देखना चाहते हो।"

टॉम सिर झुकाए रहा—।

टॉम की इस चुप्पी ने कोबरा के दिल को जला डाला—उसकी बल्ब के समान स्पार्क करती आँखें टॉम पर जम गईं—और सहसा ही उसके हाथ से कुर्सी के हत्थे पर लगा एक बटन दब गया।

बटन के दबते ही कमरे की छत में—तेज आवाज के साथ चौकोर दरवाजा बन गया—और घर्र-घर्र की आवाज करता हुआ एक पिंजरा छत में बने दरवाजे से होता हुआ कमरे के फर्श पर आकर रुक गया—साथ ही एक करुणा-भरी चीख उठी—"टॉम···मेरे टॉम ?"

टॉम ने चौंककर सामने देखा—इस आवाज ने उसके शरीर में बिजली-सी दौड़ा दी थी—इस आवाज को यहां सुनने की कल्पना भी नहीं करता था।

वह रोजी थी—बला की खूबसूरत लड़की—जो मुश्किल से अठ्ठारह-उन्नीस साल की उम्र की थी—उसका चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ था।

वह एक पिंजरे में खड़ी थी—पिंजरा भी इतना तंग था कि वह उसमें सिर्फ खड़ी रह सकती थी—बैठने के लिए घुटना मोड़ना उस पिंजरे में असम्भव था।

रोजी को वहां देख टॉम का दिमाग चकरा गया—और इसके साथ ही उसके जिस्म में तनाव आता गया वह पिंजरे की ओर झपटा—लेकिन कुछ कदम चलने के बाद किसी चीज से टकराया और चीखता हुआ पीछे की ओर उछल गया।

बीच में एक अदृश्य पारदर्शी दीवार थी—टॉम उसी दीवार से टकराया था।

टॉम फर्श पर गिरते ही चीखा—"र···रऽऽ···ओऽऽ···जी।"

"हा···हा···हा···।" जवाब में कोबरा का खौफनाक अट्टहास गूंज उठा—"रोजी को तुम अपनी आंखों के सामने तड़फ-तड़फ कर मरते देखोगे टॉम—मेरे भेड़िए ने काफी समय से आदमी का खून नहीं पिया है···आज वह रोजी का खून पियेगा इसमें सिर्फ गद्दारी भरी है—ये न मेरी वफादार है···न तुम्हारी—और न रॉकी की—इसकी जीभ पर गद्दारी का खून लगा हुआ है···।"

"कोबरा···।" सहसा टॉम घायल शेर की तरह दहाड़ उठा—"रोजी मेरी है···सिर्फ मेरी तुम उसे कुछ नहीं कहोगे।"

"टॉम—अब तुम अदब कायदा भी भूल गये—तुम भूल गए कि हमें सब लोग महान कोबरा कहते हैं।"

"तू नीच···कमीने···तू महान नहीं हो सकता—तुझे अपने घिनौने कामों से प्यार है—तुझे दौलत से प्यार है—जो तेरे लिए अपनी जान जोखिम में डालते हैं—उनसे तुझे प्यार नहीं है—एक इंसान की कीमत तेरी नजरों में कुछ भी नहीं है।"

"हम यह सब बातें मानते हैं—टॉम—तुम अब मरने वाले हो—मरने से पहले तुम जो भी कहोगे···और कहो टॉम—हमें यह जानकर खुशी होती है कि हमारा कोई साथी हमें नीच और कमीना कहे।"

"हां—हां—कुत्ते—तू नीच है···कमीना है—जल्लाद है—तेरी मौत भी उससे कम भयानक नहीं होगी—जितनी रोजी की मेरी या कालिया की होगी।"

"कोबरा का जीवन बहुत लम्बा है—टॉम—तेरे कहने से कोबरा मर नहीं जाएगा—।" कोबरा ने कहा और तभी मुंह से एक सीटी की आवाज निकाली—सीटी की आवाज सुनते ही भेड़िया उछल कर रोजी के पिंजरे के पास आ गया और गुर्राने लगा—रोजी आगे की कल्पना करके चीख उठी—"न···हीं···।"

"हा···हा···हा···।" कोबरा ने अट्टहास लगाया और कुर्सी

के हत्थे में लगे गुप्त बटनों में से कोई एक बटन दबा दिया ।

बटन के दबते ही पिंजरे का दरवाजा बाहर की ओर खुल गया और जैसे ही दरवाजा खुला रोजी की चीख गूंजी—और इसके साथ ही भेड़िए ने रोजी पर झपट्टा मारा—भेड़िए का निशाना अचूक था—पहले की झपट्टे में उसके विशाल जबड़े में रोजी की गरदन फंस गई और उसकी चीख आधी गूंज कर रह गई ।

भेड़िए ने अपने शरीर को पिंजरे से बाहर खींचा और रोजी को नीचे गिरा लिया—फिर वह रोजी की गरदन को ऐसे झिंझोड़ने लगा—जैसे वह जंगल में अपने शिकार को झिंझोड़ने का अभ्यस्त होता है ।

रोजी का शरीर छटपटा रहा था—उसकी विरोध शक्ति खत्म हो चुकी थी—बस प्राण निकलने बाकी थे ।

तभी टॉम और कालिया के हाथ में रिवॉल्वर चमक उठे—और एक साथ उनके रिवॉल्वर गर्जे मगर जैसी कि उन्हें आशा थी—गोलियां अदृश्य दीवार से टकराकर बेकार हो गई ।

उधर अब रोजी का छटपटाता शरीर शान्त हो गया था—भेड़िया लपलपाती जीभ रोजी की गरदन से बहने वाले गर्म-गर्म खून को चाट रही थी—और कोबरा अट्टहास लगा रहा था ।

टॉम और कालिया भी घिर चुके थे—वे जानते थे कि अब वे किसी भी सूरत में अपना बचाव नहीं कर सकते गिड़गिड़ाना··· याचना करना उतना ही बेकार है—जितना यह सोचना कि पत्थर आंसुओं की गर्मी से पिघल जाएगा ।

दोनों ने देखा कि दीवारों में मशीनगनों की नाले निकल आई हैं—जो धीरे-धीरे हिल रही हैं और इन्हें अपने निशाने पर ले रही हैं ।

फिर सहसा ही उन गनों की नालों से अनगिनत गोलियां निकली जो टॉम और कालिया के शरीरों में धंस गई ।

दोनों कटे वृक्ष के समान फर्श पर गिर पड़े—गिरने के साथ ही उनके प्राण-पखेरू उड़ चुके थे ।

उधर भेड़िये ने भी रोजी का पीछा छोड़ा और जीभ से अपनी थूथनी को चाटता हुआ कोबरा के बराबर में जा बैठा ।

कोबरा ने कुर्सी के हत्थे का एक बटन दबाया और बोला—"नम्बर जैड, चार आदमी भेज दो—कुछ कूड़ा करकट इकट्ठा हो गया है यहां···।"

कुछ देर बाद दरवाजा खुला और चार आदमियों ने कमरे में प्रवेश किया—रोजी जिस पिंजरे में ऊपर से आई थी वह पिंजरा इस बीच ऊपर जा चुका था—बीच की अदृश्य दीवार भी हट चुकी थी ।

तीन आदमियों ने रोजी, कालिया और टॉम की लाशें उठाईं और चौथे को कोबरा ने टॉम द्वारा लाई गई पेटी खोलने का आदेश दिया ।

पेटी खुली उसमें कंकड़-पत्थर भरे हुए थे और ऊपर एक कागज पड़ा था—जिस पर एक खोपड़ी का निशान बना था—उसके नीचे लिखा था—"तिकड़मबाज ।"

उस आदमी ने वह कागज आगे बढ़ा दिया—जिसे भेड़िया उठा कर ले गया और कोबरा को दे दिया ।

कोबरा ने कागज पढ़ा—और मसल कर फेंक दिया—फिर गर्जा—"नम्बर जैड, नम्बर के को भेजो—उससे कहना कि अपने ग्रुप को तैयार होने का आदेश देता जाए ।"

□ □

भू-सर्वेक्षण विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर सुधाकर राय—उस तहखाने में दीवार के साथ जंजीरों से बंधे खड़े थे—और पिछले दो घण्टों से जब से उन्हें एक हब्शी ने लाकर बांधा था—और

दरवाजा बाहर से बन्द करके चला गया था।—वे तहखाने में पड़े सामान को देख रहे थे—एक ओर लकड़ी की पेटियां एक के ऊपर एक चिनी हुई थीं—उसके बराबर में ही—कुछ खाली ड्राम पड़े थे—दूसरी ओर एक मेज और दो कुर्सियां पड़ी थीं—वहीं कुछ औजार पड़े थे, कुदाले, सब्बल, बेलचे इत्यादि—इसके अलावा तहखाने में कुछ नहीं था—वे लाचारी से बन्द दरवाजे को देखते और फिर सामान पर निगाह दौड़ाने लगते।

जो हब्शी उन्हें दो घण्टे पहले रिवॉल्वर की नोंक पर यहां लाकर बन्द कर गया था उसने अब तक उनकी कोई खबर नहीं ली थी।

उस हब्शी ने उन्हें जंगल में गिरफ्तार किया था—जबकि वे चौहान के कहने पर कुमार के साथ अपनी जीप में लौट रहे थे—जीप कुमार ही चला रहा था—उसने रास्ते में एक स्थान पर जीप रोक दी थी—और रिवॉल्वर निकालकर उन्हें विवश कर दिया था—फिर मुंह से एक सीटी की आवाज निकाली थी जिसे सुनते ही निकट की झाड़ियों में से हब्शी प्रकट हुआ था।

फिर हब्शी ने राय साहब के हाथ-पैर बांधे मुंह पर कपड़ा बांधा—इस बीच कुमार रिवॉल्वर ताने रहा था—फिर कुमार जीप से उतर गया था और हब्सी जीप ले आया था—उसने इसी मकान पर जीप रोकी थी—और राय साहब को कन्धे पर लाद कर इस तहखाने में लाकर जंजीरों में बांध कर रस्सी के बन्धन खोल दिए थे और मुंह से कपड़ा निकाल दिया था।

इस प्रकार राय साहब कुमार की कैद में आ फंसे थे—उन्हें याद था कि कुमार ने विदा होते समय हब्शी से कहा था—"मैं सुबह तुमसे मिलूंगा—तब तक तुम राय को कोई चालाकी दिखाने का अवसर मत देना।"

राय साहब उन जंजीरों को बड़ी लाचारी से देख रहे थे—जिन्हें तोड़ना किसी इन्सान के बस की बात नहीं लगती थी।

फिर जब दीवार में हवा के आवागमन के लिए बने छेदों से निकलकर कुछ रोशनी अन्दर आयी तो उन्हें महसूस हुआ सुबह हो चली है।

अब तहखाने में जल रहे उस कम पावर के बल्ब की जरूरत नहीं रह गई थी जो तहखाने के बीच में छत से एक डोरी पर लटका हुआ था।

सहसा ही राय साहब चौंके—तहखाने के दरवाजे पर आहट हुई थी—हल्की खड़खड़ाहट जैसे कोई दरवाजे की सांकल में लटके ताले को खोल रहा हो···।

राय साहब का ध्यान दरवाजे पर केन्द्रित हो गया—उन्हें यह जानने कि उत्सुकता थी कि आने वाला हब्शी है, कुमार है या कोई और है।

प्यास के मारे उनका हलक सूख रहा था—वे सोच रहे थे—आगन्तुक कोई भी हो पहले वे उससे पानी मांगेंगे।

और आगन्तुक था हब्शी—।

हब्शी अपने लम्बे-तगड़े शरीर के साथ कमरे में घुसा—और लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ राय साहब के सामने आकर खड़ा हो गया। हब्शी के चेहरे पर लाचारी और निराशा के मिले-जुले भाव थे—जैसे उसे कोई ऐसा काम करना हो जिसे करना उसकी लाचारी हो और इससे पहले उसे जिस बात की आशा थी—वह अब निराशा में बदल गई हो।

राय ने उसे खामोश देखकर पूछा—"मेरी समझ में नहीं आता तुमने मुझे यहां क्यों कैद किया है—और मुझसे क्या चाहते हो?"

"तुम्हारे इन सवालों का जवाब बॉस ही दे सकते हैं—मिस्टर राय—मैंने जो कुछ किया उनके आदेश पर किया—और अब तक उनके नये आदेश की प्रतिक्षा में था—लेकिन मुझे पता चला है कि बॉस अब यहां नहीं आयेंगे—वो गिरफ्तार हो चुके हैं—इसलिए

मेरे लिए तुम बेकार के आदमी हो—मैं तुम्हें आजाद करने आया हूं मुझे उम्मीद है कि तुम यहां से छूटकर अपने घर जाओगे—पुलिस में अपने अपहरण की रिपोर्ट दर्ज कराके अपनी जान मुसीबत में नहीं डालोगे ?"

"तो क्या सचमुच कुमार कैद हो गया···?" राय ने चौंककर हैरानी से पूछा।

"हां—मुझे पता चला है कि वह कैद हो गए—उनके स्थान पर एक दूसरा व्यक्ति कोबरा के पास गया था—जिसे कैद कर लिया गया है।"

"ओह—! तो क्या कुमार ने तुम्हें वाकई कुछ नहीं बताया था कि मुझे यहां क्यों लाया गया है ?"

"सिर्फ इतना कि—आपसे कुछ पढ़वाना है—लेकिन वह तख्ती बॉस ने उस समय तुमसे ले ली थी।"

"क्या तुम कुमार के बाकी दोनों साथी खान और चौहान से मिलकर मेरी मदद नहीं ले सकते—अपने बॉस की जगह तुम उनके इंचार्ज बन जाओ—मैं जानता हूं—जो तख्ती वह लोग मुझसे पढ़वाना चाहते हैं वह एक खजाने का नक्शा है ?"

"तुम्हें शायद मालूम नहीं मिस्टर राय—कि चौहान मारा जा चुका है—और खान अपनी जान बचाने की फिक्र में गायब हो गया है—पिछले पांच-छः घण्टे जो मैंने बॉस की प्रतीक्षा में गुजारे हैं उनमें मैंने यह सब मालूम कर लिया है—मैं जानता हूं अब उस तख्ती का मालिक या तो कोबरा होगा—या वह दल होगा जिसने मेरे बॉस को कैद किया है—और मैं उन दोनों से अकेला टक्कर नहीं ले सकता—कोबरा शैतान है—और वह दूसरा दल···मेरा ख्याल है वो पुलिस का दल है—जिसे बॉस के एक नौकर ने मरते समय इस पूरे मामले की खबर दी थी—। मेरे लिए बेहतर यही है कि बॉस की कमाई हुई दौलत ले जाऊं और किसी दूसरे मुल्क में जाकर अपना एक गिरोह बनाऊं।"

कहकर वह राय साहब के बन्धन खोलने लगा—जंजीर में तीन ताले लगे हुए थे—हब्शी ने तीनों ताले चाबी से खोल दिये और राय को आजाद कर दिया—उसे पूरा विश्वास था कि राय आजाद होने की खुशी में उसका आभारी होगा और चुपचाप वहां से चला जायेगा।

'मैं चाहता तो तुम्हें मार सकता था—मिस्टर राय—लेकिन तुमसे मेरी कोई दुश्मनी नहीं—दुश्मनी तब बनेगी जब तुम पुलिस को इत्तला देने की कोशिश करोगे—हां—दो दिन बाद बेशक तुम यह काम भी कर देना—क्योंकि तब तक मैं इस देश से बाहर चला जाऊंगा।"

राय के होंठों पर मुस्कराहट फैल गई, वे बोले—"मुझे पुलिस में खबर करने की कोई जरूरत नहीं है।" कहने के साथ ही राय साहब ने अपने दाएं कान पर हाथ घुमाया—और दो क्षण बाद ही वे अपने चेहरे पर चढ़ी हुई पतली-सी झिल्ली उतारते चले गए।

अब वे राय साहब नहीं थे—वह एक नया चेहरा था।

हब्शी उस चेहरे को देखकर चौंका अवश्य—लेकिन वह यह नहीं पहचानता था कि उसके सामने इस समय पुलिस कमिश्नर प्रताप सिंह खड़े हैं।

"कौन हो तुम···?" सहसा ही हब्शी का शरीर तन गया और पलक झपकते ही उसकी जेब में पड़ा रिवॉल्वर उसके हाथ में नजर आने लगा।

"मुझे पुलिस कमिश्नर प्रतापसिंह कहते हैं—।" सामने वाले व्यक्ति ने कहा जो वास्तव में ही पुलिस कमिश्नर प्रतापसिंह थे—।

"त···तुम···।" हब्शी चौंककर दो कदम पीछे हट गया—उसकी आंखें हैरानी से फट पड़ीं···।

"प्रोफेसर राय मेरे बचपन के दोस्त हैं—दो दिन पहले उन्हें खान का फोन मिला था—उसने प्रोफेसर से मिलने की इच्छा

जाहिर की और अगले दिन वह प्रोफेसर से मिला उसने बताया कि—उसके संग्रहालय से वह तख्ती चुरा ली गई है—जिस पर सूनी घाटी के खजाने का नक्शा है—उसके स्थान पर जो तख्ती रखी है वो नकली है—उस पर जो रास्ते अंकित है वो सूनी घाटी के उस हिस्से में ले जाते हैं—जहां ज्वालामुखी है—उसने प्रोफेसर को धमकी दी कि अगर वह उनके साथ नहीं मिले तो—उनके सामने उनके दोनों लड़कों को गोली मार दी जायेगी—वह फिर मिलने के लिए कहकर चला गया—उसके बाद प्रोफेसर ने मुझे पूरी बात बताई और कहा कि वह ऐसी मदद चाहते हैं जिससे उनके परिवार के किसी सदस्य की जान खतरे में न पड़े—तब मैंने उनका स्थान लिया—दूसरी बार खान प्रोफेसर राय से नहीं मुझसे मिला—और इस प्रकार मैं यहां तक पहुंचा—अब तुम अपने आप को पुलिस की हिरासत में समझो और रिवॉल्वर फेंक दो···।"

"मुझे बेवकूफ मत समझो कमिश्नर—ये रिवॉल्वर फेंकने के लिए नहीं है—बल्कि इसकी नोक पर तुम मेरे आगे चलोगे—रिवाल्वर मेरी जेब में रहेगा—तब भी इसका निशाना तुम पर रहेगा—तुम मुझे इस देश से निकलने में मदद दोगे—बेवकूफी तुमने की जो अपना रहस्य खोल दिया—वरना तुम्हें मैं यहां से जाने के लिए रोक नहीं रहा था।"

"मेरी जिन्दगी इन रिवॉल्वरों के साये में ही गुजरी है—ये रिवॉल्वर तुम फेंक ही दो तो अच्छा है···।"

"बहुत खूब—शायद तुम्हें विश्वास है कि तुम मेरे हाथ से रिवॉल्वर छीन लोगे—दुनिया के जितने भी बेहतरीन निशानेबाज हैं—वो मेरा नाम अवश्य जानते हैं—शायद तुमने भी कभी माइ-कल जोम्बा का नाम सुना होगा···।"

"मुझे दुःख है कि मैंने तुम्हारा नाम नहीं सुना—इसलिए तुम्हारी धाक मुझ पर नहीं जम सकती—लेकिन फिर भी अगर

अपने आपको एक बेहतरीन निशानेबाज समझते हो तो मैं तुम्हारा निशाना देखना चाहूंगा—इस समय मैं तुम्हारे सामने लगभग पांच फुट की दूरी पर खड़ा हूं—इतनी दूरी पर वह आदमी भी निशाना लगा सकता है जिसने अपने जीवन में पहली बार रिवॉल्वर पकड़ा हो—लेकिन मैं तुम्हें—तुम जो अपना नाम दुनिया के बेहतरीन निशानेबाजों में जोड़ते हो—चैलेन्ज करता हूं कि मेरा निशाना लगाओ।"

"लेकिन मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता कमिश्नर—मैं तुम्हें ढाल बनाकर इस देश से बाहर जाना चाहता हूं—वरना मैं तुम्हारे इस चैलेन्ज को अवश्य स्वीकार करता···।" जोम्बा ने कहा।

"मेरे दायें जूते की ऐड़ी में एक सुनहरा बिल्ला है।" कमिश्नर साहब ने कहा—"वह बिल्ला मुझे माननीय राष्ट्रपति महोदय की ओर से मिला है—तुम इस बिल्ले को दिखाकर कहीं भी—किसी भी देश में जा सकते हो—तुम्हें भेष बदलने की भी जरूरत नहीं है—सिर्फ इतना कह देना काफी होगा कि तुम कमिश्नर प्रताप-सिंह के आदमी हो—कोई तुमसे किसी प्रकार का प्रमाण नहीं मांगेगा—अगर तुम्हारी गोली से मैं मर गया तो तुम बड़ी आसानी से इस देश से बाहर जा सकते हो···।"

"मुझे तुम्हारी बात पर विश्वास है कमिश्नर—और अब मैं महसूस कर रहा हूं कि अगर मैंने तुम्हारा चैलेन्ज स्वीकार न किया तो मुझे दुःख होगा कि मैंने अपने आपको तुम्हारे सामने कमजोर समझा है—अब तैयार हो जाओ मरने के लिए···।"

जोम्बा ने कहा और ट्रेगर दबा दिया—"धांय···।"

जोम्बा ने कमिश्नर साहब के दिल का निशाना लिया था—लेकिन निशाना चूक गया—गोली दीवार से टकरायी और प्लास्टर में एक गड्ढा बनाकर गोली नीचे गिर गई।

जोम्बा ने आश्चर्य से दो-तीन बार पलकें झपकायी—उसने देखा था कि जिस क्षण गोली उसके रिवॉल्वर से निकली थी—

कमिश्नर साहब के शरीर ने एक झटका खाया था—और उसी से निशाना चूक गया था।

''अभी तुम्हारे रिवॉल्वर में पांच गोलियां और हैं जोम्बा—और अभी तुमने दावा किया था कि तुम्हारा नाम दुनिया के बेहतरीन निशानेबाजों के साथ लिया जाता है···?''

जोम्बा झुंझला-सा गया और उसने ट्रेगर दबा दिया—कमिश्नर साहब ने अपना शरीर थोड़ा-सा बांयी ओर झुकाया और गोली को अपने दांयें कन्धे के पास से निकलने का रास्ता दे दिया।

जोम्बा ने तीसरा फायर किया—फिर चौथा भी उसके साथ ही कर दिया—इस बार कमिश्नर साहब नीचे झुक गए—और दोनों गोलियों को पूरा सम्मान देते हुए अपने ऊपर से गुजर जाने दिया।

दीवार की प्लास्टर का एक बड़ा टुकड़ा उखड़ कर नीचे गिर चुका था—गोलियों की मार से।

''दो गोली और चलाओ जोम्बा—और अपना नाम उन लोगों में लिखवा लो जो पांच फिट की दूरी से भी निशाना नहीं लगा सकते···।''

जोम्बा ने तिलमिला कर बची हुई दोनों गोलियां भी चला दी—फिर रिवॉल्वर ही फेंक मारा···कमिश्नर साहब इस बार उछलकर बांयी ओर हट गये थे—और सही सलामत खड़े थे।

□ □

इमारत के सामने दीपू ने मोटर साइकिल रोकी—चन्दू ने उतरकर गेट खोला—तब तक दीपू मोटर-साइकिल का इंजन बंद करके उसे स्टैण्ड पर लगा चुका था।

फिर वे दोनों साथ-साथ इमारत में घुसे।

लेकिन इस समय उन्हें कोई पहचान नहीं सकता था—कुछ

आगे बढ़कर दोनों ने अपने चेहरों को काले नकाबों से ढक लिया था—उनके शरीर पर काली चुस्त पोशाक थी···कमर पर चमड़े की मोटी बेल्ट थी—हाथों में काले दस्ताने थे।

''अभी कहीं वो निशाना लगाये ही न बैठा हो···।'' दीपू फुस-फुसा कर बोला।

''अगर ऐसा होता तो अब तक वो गोली चला चुका होता।''

चन्दू ने गलियारे में प्रवेश करते हुए।

ऐसा लग रहा था मानों उस इमारत का पूरा नक्शा उनके दिमाग में है—या वे पहले भी वहां कभी आ चुके हैं।

गलियारे के आखिरी कमरे के दरवाजे पर वे रुके—दीपू ने दरवाजे का हैण्डल घुमाया—दरवाजा खुला हुआ था दोनों कमरे में आ गए।

कमरे के कोने में एक बड़ा लोहे का सन्दूक पड़ा था···दोनों उस सन्दूक के पास जाकर खड़े हो गए।

''वो अन्दर गया है—वरना सन्दूक पर ताला लगा होता···।''

दीपू ने कहा और सन्दूक का ढक्कन हटा दिया···।

दोनों ने सन्दूक में झांका—सन्दूक का पेंदा नहीं था···बल्कि नीचे जाने के लिए सीढ़ियां थीं···।

''कुमार ने तो कहा था—सन्दूक का पेंदा होगा जिसे खोलने के लिए उसने कहा था कि ताला लगाने वाले कुण्डे को घुमाने से पेंदा हट जायेगा।'' दीपू ने कहा।

''अबे—मोटे···जब जोम्बा अन्दर है तो जाहिर ही पेंदा हटा कर ही गया होगा···।''

''धत्त तेरे की इतनी-सी बात पर क्या झगड़ा यार! आ चल अन्दर चलें···।''

और दोनों सन्दूक से उतर गये और सीढ़ियां तय करके एक कमरे में पहुंचे—दांयीं ओर एक दरवाजा था जो खुला हुआ था—दोनों जैसे ही दरवाजे पर आये एक जोरदार धमाका हुआ।

रिवॉल्वर के धमाके को दोनों ने साफ पहचाना और अन्दर झांक कर देखा...।

"हैं...! कमिश्नर अंकल...।" चन्दू के मुंह से आश्चर्य भरा स्वर फूटा।

"डैडी...।" वैसा ही स्वर दीपू के मुंह से निकला।

दोनों ने देखा था कि कमिश्नर साहब के सामने एक लम्बा तगड़ा हब्शी रिवॉल्वर लिये खड़ा है।

"इसकी तो ऐसी...तैसी...।" चन्दू ने कहा और अपना रिवॉल्वर निकाल लिया।

"अबे तमाशा देख तमाशा—ये तो क्या इसके फरिश्ते भी डैडी को निशाना नहीं बना सकते।" दीपू उसका हाथ पकड़कर फुसफुसाया।

और दोनों खामोशी से खड़े हो गये।

जोम्बा की पांचों गोलियों को उन्होंने बेकार जाते देखा...।

जोम्बा कुछ क्षण तो कमिश्नर साहब को आग्नेय नेत्रों से घूरता रहा फिर बड़ी फुर्ती से उस ओर पलटा जिस ओर बेलचे, कुदाले इत्यादि पड़ी थीं।

और तभी चन्दू के रिवॉल्वर से एक शोला निकला—और एक दहकता हुआ अंगारा जोम्बा की जांघ में समा गया।

गोली की आवाज के साथ ही जोम्बा की चीख गूंजी और वह लड़खड़ाकर फर्श पर गिर पड़ा।

"बस—खेल खत्म हुआ जोम्बा...।" कहते हुए चन्दू ने तहखाने में प्रवेश किया—लेकिन आवाज इस समय बदली हुई थी... जिसे कमिश्नर साहब भी पहचान न सके।

चन्दू के साथ ही दीपू ने भी तहखाने में प्रवेश किया।

"कौन हो तुम...?" कमिश्नर साहब की कठोर आवाज गूंज उठी।

दोनों ने कमिश्नर साहब की ओर देखा—अभिवादन में सिर

झुकाये फिर चन्दू ने कहा—"हम हैं दो उस्ताद—यहां आये थे जोम्बा की खैर खबर लेने और राय साहब को छुड़ाने लेकिन यहां तो दूसरा ही किस्सा निकला।" चन्दू की आवाज इस समय बिल्कुल बदली हुई थी।

"मैं ही राय साहब के मेकअप में था—।" कमिश्नर साहब ने कहा—"लेकिन तुम कौन हो...?"

दोनों कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़े—दोनों ने एक साथ सैल्यूट दिया—फिर दीपू ने आवाज बदलकर कहा—

"बाल सीक्रेट सर्विस के—दो उस्ताद...।"

"तुम्हारे नाम क्या हैं...?"

"बाल सीक्रेट सर्विस का कोई भी एजेन्ट अपना नाम नहीं बताता...।" दीपू ने कहा।

"आप अगर आज्ञा दें तो हम पुलिस को फोन कर दें...।" चन्दू ने कहा।

"हां...।"

और दोनों पलट कर चल दिये...।

जोम्बा लाचार हो चुका था—और कमिश्नर साहब सोच रहे थे कि कौन हो सकते हैं—ये दो नकाबपोश...?

□ □
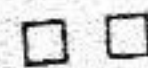
वे गिनती के पन्द्रह नकाबपोश थे जो इस समय बाल सीक्रेट सर्विस की इमारत के पीछे सड़क पर खड़े थे—और इस समय वहां उन्हें देखने वाला कोई नहीं था।

एक-एक कर वे रैनी पाइप पर चढ़कर छत पर पहुंचे—और छत पर आते ही उन्होंने रिवॉल्वर निकालकर हाथों में ले लिये।

"नम्बर वन—तुम आगे चलो तुम्हें रास्ता मालूम है...।" एक नकाबपोश ने कहा जो सम्भवतः उनका लीडर था।

लीडर के हाथ में एक यन्त्र था—जिस पर शीशे का डायल बना हुआ था—डायल में एक सुई थिरक रही थी और पूर्व दिशा में इशारा कर रही थी...मगर पूर्व की ओर इमारत की छत की मुंडेर थी—।

नम्बर वन आगे आ चुका था—और अब वे सब उसके पीछे सीढ़ियों पर आ चुके थे।

इमारत में एक अजीब-सी खामोशी छाई हुई थी—ऐसा लगता था कि इमारत में कोई रहता ही नहीं है।

नम्बर वन सीढ़ियों पर उतरा—उसके पीछे उसके साथी थे—सबके सब बाघ की तरह घात लगा कर सीढ़ियां उतर रहे थे इनके हाथों में दबे रिवॉल्वर किसी भी क्षण आग उगल सकते थे।

दूसरी मंजिल पर उन्हें एक आदमी मिला—वो वहां पहरा दे रहा था—और इससे पहले कि उसे इन लोगों की भनक पड़ती—इन लोगों ने उसे दबोच लिया और बिना आवाज पैदा किये उसे बेहोश करके एक कमरे में डाल दिया।

चार मंजिली इमारत की तीन मंजिलों पर इन्हें कुल चार पहरेदार मिले जिन्हें बिना किसी कठिनाई के इन्होंने बेहोश कर दिया—शिकार को दबोचने के बाद ये लोग जबरदस्ती उसे एक इंजेक्शन देते थे।

"अब जरा सम्भल कर रहना—जो कुछ होना है—अब शुरू हो जाएगा। हो सकता है—हमें मुकाबला करना पड़े...।" आगे-आगे सीढ़ियां उतरते नम्बर वन ने कहा।

नम्बर वन की चेतावनी सुनते ही सबने अपने रिवॉल्वरों पर हाथ की पकड़ सख्त कर दी।

उन्हें सबसे अधिक हैरानी इस बात की थी कि अब तक इन्हें कुल चार पहरेदार मिले हैं—जबकि वे पचास आदमियों से टकराने का हिसाब किताब लगाकर चले थे और वैसी ही तैयारी भी थी।

निचली मंजिल के एक कमरे को छोड़ कर बाकी सब कमरे

बन्द थे—नम्बर वन पहले उसी कमरे में गया—कमरा खाली पड़ा था—दो टूटी हुई कुर्सियां जरूर वहां पड़ी थीं।

बांयी ओर गलियारा था—कथित नम्बर वन ने गलियारे की ओर बढ़ने के लिए कहा—और सबसे पहले खुद ही गलियारे में गया—।

गलियारे के आखिर में एक चौकोर दरवाजा था—जिसके दूसरी ओर एक कमरे का दरवाजा नजर आ रहा था—दांयें-बांयें जाने के लिए रास्ता भी था—लेकिन गलियारे के आखिर में जो दरवाजा बना हुआ था—उस पर कोई दरवाजा नहीं था—जिससे उसे बन्द किया जा सके—ऐसा ही दरवाजा इस ओर था—दोनों की दीवारें सपाट थीं।

वे सब के सब दबे पांव गलियारे के दूसरे सिरे की ओर बढ़ चले—इनके सरगने के हाथ में जो यन्त्र था उसकी सुई भी उस ओर संकेत कर रही थी।

लेकिन जैसे ही वे गलियारे के बीच में आये—खट-खट अगले पिछले दोनों रास्ते बन्द हो गये—वहां जहां दरवाजा था मगर दरवाजा नजर नहीं आ रहा था—वहां अब दीवार खड़ी हो चुकी थी।

वे फंस गये थे।

"नम्बर वन...ये क्या है...?" सरगना बौखलाकर चीखा।

"इसके बारे में मुझे कुछ भी मालूम नहीं था बॉस—लगता है उन्हें हमारे आने की भनक पहले से ही थी।"

अभी उसकी बात समाप्त ही हुई थी कि गलियारे के फर्श में एक साथ पचासियों सूराख बन गये और उन सूराखों में से तेजी से धुवां निकलने लगा।

धुवां इतना सुगन्धित था कि कुछ क्षणों के लिए तो वो भूल ही गये कि हम चूहेदानी में आ फंसे हैं—फिर उन्हें यह अंदाजा कहां से होता कि यह खुशबू उन्हें बेहोश करने के लिये छोड़ी गई है।

वह सब बुरी तरह से इधर-उधर झूम रहे थे—महसूस कर रहे थे कि यदि जल्दी से यहां से नहीं निकल पाए तो धुएं के प्रभाव से चेतना खोते देर न लगेगी।

कथित नम्बर वन ने लड़खड़ाती आवाज में कहा—"बॉस यह धुआं हमें बेहोश करने के लिए किया जा रहा है—बताइए क्या करें ? यदि हम बेहोश होने के बाद उनके हाथों में आ गये तो हमारी जान की खैर नहीं।"

सरगना बोला—"घबराओ नहीं नम्बर वन !" फिर उसने अपने साथियों की तरफ देखा—उन पन्द्रह में से लगभग सात-आठ तो शायद बेहोश हो ही चुके थे—बोला—"सभी जल्दी से अपनी सांस रोक लो—और यह जानने की कोशिश करो कि फर्श से धुआं किन-किन छिद्रों से आ रहा है—उन पर लेट जाओ अपने वस्त्रों को उतार कर उसमें ठूस दो—जल्दी करो…।"

सुझाव अच्छा था—शेष बचे नकाबपोशों के मन में इस नशे की हालत में भी थोड़ा जोश आ गया—वह जल्दी-जल्दी फर्श के छिद्रों को टटोलने लगे—और थोड़ी देर में लगभग उन्होंने सभी छिद्रों पर काबू पा लिया—अब केवल रिस-रिस कर ही धुआं आ रहा था—जो कि उनके मस्तिष्क पर प्रभाव करने के लिए पर्याप्त नहीं था—वह धुआं बल्कि उन्हें अब सुगंधित लग रहा था—जैसे कोई इत्र की महक हो।

थोड़ी देर बाद धुआं स्वयं ही समाप्त हो गया अब पहले जैसा साफ दृश्य था रोशनी साफ थी।

सरगने ने देखा कि उसके दस साथी पूरी तरह से बेहोश थे—फिर उसने उन नकाबपोशों को देखा जो हिल-डुल रहे थे किन्तु अभी भी छिद्रों से चिपटे थे।

"नम्बर वन !" वह सरगना धीरे से बोला।

—"यस बॉस—मैं सही-सलामत हूं।"

"नम्बर एक्स और वाई।" वह फिर बोला।

—"यस बॉस—हम भी सही हैं।" दो नकाबपोश एक साथ बोले।

इसके बाद सरगने ने और भी कई नाम पुकारे परन्तु कोई भी उत्तर नहीं मिला—वह समझ गया कि वह सब बेहोश हो गए हैं।

"ठीक है—हम चार ही सही—सभी तैयार हो जाओ—किसी क्षण वह सब आ सकते हैं—और देखो हममें से कोई भी जिन्दा उनके हाथ नहीं पड़ना चाहिए—जहां तक हो सके भागने की कोशिश करनी है—लेकिन इन सातों सबको जो बेहोश पड़े हैं—इन्हें भी गोली मार देना—कहीं ये होश में आने पर सब कुछ उगल न दें—समझे…।" सरगना अपने बाकी साथियों को समझा ही रहा था कि तभी—

खड़…खड़ की धीमी-सी आवाज से सामने की दीवार हट गयी एक रास्ता-सा बन गया—वहां से दो साये उनकी तरह के ही नकाब पहने आ रहे थे।

—"सावधान…।" सरगन. धीमे से फुसफुसाया।

वह दोनों आगे बढ़ रहे थे—करीब पहुंचने पर आगे वाला नकाबपोश रुक गया—उसने अपने साथी को भी हाथ से इशारा किया—वह भी रुक गया और तभी सहसा कुछ महसूस करने के बाद उसके दोनों हाथ लबादे में लहराये और उसने अपना रिवॉल्वर खींच लिया—

"धांय…!" अपने साथी से बिना कुछ बोले उसने फायर कर दिया—जिस पर उसके साथी ने खामोश-सा प्रश्न किया—लेकिन तभी संतुष्ट हो गया जब उसने धमाके के साथ चीख भी सुनी।

मरने वाला नम्बर वन था—शायद वह थोड़ा-सा हिला था जिसे वह नकाबपोश ताड़ गया था।

इसके बाद शेष बचे तीन नकाबपोशों का घबरा जाना स्वाभाविक ही था—शायद इसी घबराहट में वह भी थोड़ा-सा हिल गये···।

—"धांय !" एक फायर और हुआ—किन्तु उन तीन नकाबपोशों की ओर नहीं—वह गोली छत से टकरा कर बेकार हो गई—साथ ही गरजदार आवाज उभरी—

"खबरदार···ज्यादा होशियार मत बनो—जल्दी से उठ खड़े हो जाओ वरना···गोली मार दूंगा।" वह नकाबपोश बोला।

सरगना सहित उसके दोनों साथी खड़े होने के लिए मजबूर हो गये—सरगने ने शायद तेजी से खड़ा होते हुए फायर करना चाहा था किन्तु उस नकाबपोश की आंखों ने इस हरकत को देख लिया—और उसके रिवॉल्वर ने एक और लावा उगल दिया।

□ □

कोबरा का भेड़िया उससे दस कदम आगे गुर्राहटें निकालता हुआ बढ़ रहा था—चार आटोगनधारी व्यक्ति कोबरा के पीछे थे—।

बन्द रास्ते अपने आप खुलते चले जा रहे थे—और जैसे ही वे एक दरवाजा पार करते दूसरा दरवाजा बन्द हो जाता। स्पष्ट था कि कोई उन्हें देख रहा है—और दरवाजों को कन्ट्रोल कर रहा है।

गलियारे के दोनों ओर कैदियों की बैरेकें थीं—और इस समय उनमें कोई कैदी नहीं था।

गलियारे के आखिर में भेड़िया जब एक बैरेक के पास पहुंचा तो बैरेक का दरवाजा खुल गया और भेड़िया अन्दर चला गया—उसके पीछे कोबरा और चारों आटोगनधारी भी बैरेक में घुस गये—उनके अन्दर होते ही बैरेक का दरवाजा बन्द हो गया—और

बैरेक का फर्श लिफ्ट की तरह ऊपर जाने लगा।

कुछ देर बाद फर्श रुका—दरवाजा खुला और पहले भेड़िया ही बाहर आया।

निचले हिस्से में और इस हिस्से में कोई फर्क नहीं था—दोनों ओर वैसी ही बैरेकें थीं।

भेड़िये के पीछे कोबरा और कोबरा के पीछे चारों आटोगन-धारी गलियारे में आये और गलियारे में बढ़ चले।

और तभी—!

सभी बैरेकों के दरवाजे एक साथ खुल गये।

कोबरा और उसके साथी चौंक उठे—"नम्बर जैड—।" हिंसक स्वर में गुर्राया।

"डियर कोबरा—नम्बर जैड परलोक सिधार गये—यहां दो उस्तादों का राज है—।"

"क···क्या मतलब···।" कोबरा की आवाज में बौखलाहट की छाप पहली बार नजर आई।

"मतलब ये डियर कोबरा कि तुम्हारे वह पन्द्रह आदमी—जो एक इमारत पर धावा बोलने गये थे—वहां से तुम्हारी पांच करोड़ वाली पेटी और कैदी कुमार को लेने—बेचारे कैद हो गये—उनके स्थान पर यहां जो पन्द्रह आदमी कुमार और उस पेटी को लेकर आये हैं—वो पुलिस के खूंखार लड़ाके हैं जिनमें हम दो उस्ताद भी शामिल हैं—यहां आते ही सबसे पहला काम हमने ये किया कि तुम्हारे खास चमचे नम्बर जैड को परलोक मेल का टिकट थमा कर विदा कर दिया—उसके बाद—उसके बाद चलकर सिंहासन सम्भाला और डोंगा को आजाद किया—फिर अपने गुरु को भी आजाद किया जो डोंगा के साथ लपेटे में आ गये थे—अब ताजा समाचार यह है कि हमारे गुरु कोबरा के तिलस्मी सिंहासन पर बैठे हैं—और कोबरा उनके स्थान पर है।"

"कोबरा पर हाथ डालने से पहले तुमने ये तो सोच लिया

होगा—कि जब उसका जहर चढ़ेगा तो उसे कैसे उतारा जाएगा।" कोबरा की गुर्राहट-भरी आवाज उभरी।

"नहीं डियर कोबरा—जहर उतारने की वो सोचता है—जो कोबरा का फन नहीं कुचलना जानता—हमने तुम्हारा फन कुचल दिया—तुम अपना जहर इन दीवारों को पिला सकते हो।"

"हा···हा···हा···। हंसी आती है तुम्हारी बातों पर—कोबरा के घर में ही तुम उसे कैद करने की बात सोच रहे हो—शायद तुम ये नहीं जानते कि इस इमारत को मैंने बनवाया है···।"

"तुमने बनवाया है तो क्या हुआ डियर कोबरा—यहां उन आटोमैटिक गनों को भी कन्ट्रोल किया जाता है जो इस इमारत के चप्पे-चप्पे में बिछी हुई हैं···।"

"ये कोशिश भी कर देखो—मैं जा रहा हूं—यहां से निकलूंगा और तुम्हें यहीं कैद कर दूंगा जहां तुम बैठे हो।" कोबरा ने कहा और बराबर वाली बैरेक की ओर झपटा—तभी दीवारों में से लम्बी-लम्बी नालें निकली और दूसरे ही क्षण उन नालों से अनगिनत गोलियां निकल कर कोबरा के जिस्म से टकरायीं—उसके भेड़िये के जिस्म में दर्जनों गोली एक साथ समा गईं—और उसके चारों साथी उछल-उछल कर फर्श पर गिरे—और गिरने से पहले ही उनकी आत्मा उनके शरीर से निकल गई।

भेड़िये की अन्तिम गुर्राहट दर्द भरी थी—मरते समय अपने मालिक को देख रही थीं उसकी आंखें जबकि उसके मालिक ने एक नजर भी उस पर नहीं डाली—उसके मालिक पर गोलियों का कोई असर नहीं पड़ा था—वह कोठरी में खड़ा दरवाजे की एक सलाख को पेंच की तरह घुमा रहा था—अभी उसने सलाख को कुछ चक्कर ही घुमाया था कि कोठरी की छत में से एक चौकोर पल्ला नीचे लटक गया—उसी समय कोबरा ने छलांग लगाई और नीचे लटकते पल्ले को पकड़कर लटक गया—और अपने हाथों पर अपने शरीर का पूरा वजन डालकर अपने शरीर को ऊपर सिको-

ड़ता चला गया—और देखते-ही-देखते वह छत में बने सूराख में समा गया—।

कोबरा इस समय इमारत की छत पर खड़ा था···छत पर एक छोटा-सा हेलीकॉप्टर खड़ा का। कोबरा दौड़ता हुआ हेलीकॉप्टर तक गया और उसमें चढ़ गय।।

लेकिन तभी पीछे से एक हाथ उसकी गरदन में लिपट गया—और एक गुर्राहट भरी आवाज उभरी—"कोबरा—दिखा अपना जहर···?"

कोबरा बुरी तरह बौखला-सा गया—उसकी गरदन में लिपटा हाथ लोहे का बना हाथ महसूस हो रहा था उसे—उसने दोनों हाथों से गरदन में लिपटे हाथ को हटाना चाहा लेकिन उस हाथ की पकड़ को जितना ढ़ीला करने की कोशिश करता पकड़ उतनी ही मजबूत होती जाती···।

"कोबरा ये उसका शिकंजा है जो उस समय से तेरे पीछे है जब तू एक मामूली चोर था—तेरे हाथ एक बार भारी खजाना लग गया था जिसके बदौलत तू कोबरा बन बैठा—मुझसे हर बार बस यही चूक हुई कि मैंने तेरे आखिरी रास्ते पर नजर नहीं रखी—आज तेरा आखिरी रास्ता बन्द है—मैं ये भी जानता हूं कि तू इस हेलीकॉप्टर को लेकर कहां जाता—ज्यादा दूर नहीं यहां से आधा मील दूर—भैरों मन्दिर के तहखाने में—जहां तूने इस लाल बिल्डिंग का कन्ट्रोल रूम बनाया है—जहां से तू इस पूरी इमारत को कन्ट्रोल कर सकता है—।"

पीछे वाले व्यक्ति की बात समाप्त ही हुई थी कि कोबरा ने अपने शरीर को अचानक एक तेज झटका दिया और अपने शरीर को दरवाजे की ओर धकेल दिया। पीछे वाले व्यक्ति का बैलेन्स सम्भल न सका—फलस्वरूप वह कोबरा के साथ ही दरवाजे पर आया और फिर दोनों एक साथ बाहर लुढ़क गये।

कोबरा के गले में लिपटा हाथ हट गया—लेकिन उसे अपने

उखड़ी हुई सांसें काबू में करने के लिए समय चाहिए था—जो दूसरे व्यक्ति ने नहीं दिया।

वह एक नकाबपोश था—वही नकाबपोश जिसे कोबरा ने डोंगा के साथ गिरफ्तार कर लिया था।

नकाबपोश हेलीकॉप्टर से नीचे गिरते ही रबर के पुतले की तरह उछलकर खड़ा हो गया—और कोबरा के सीने पर उसने दांये पैर की ठोकर जमा दी।

कोबरा के मुंह से हुच्च—की-सी आवाज निकली और वह उछलकर कई कदम दूर जा गिरा।

"कोबरा—मैं तेरी एक-एक नस से वाकिफ हूं—और शायद तू सोच रहा हो तेरी शक्ल आज तक कोई नहीं देख सका है—ये भ्रम भी तेरा झूठा है—मैं जानता हूं तू आधे घण्टे तक भी अपनी सांस रोके रख सकता हूं—तुझे डोंगा लाश समझने की भूल कर सकता है लेकिन मैं नहीं—ये सब जानकर भी मैं तेरे ठिकाने पर आया था—तो ऐसे ही नहीं आ गया था—मैं तेरी इस इमारत का अन्दर का नक्शा देखना चाहता था—और मैंने वह सब किया भी—जिस सलाख को घुमाकर तू ऊपर आया है उससे मैं भी ऊपर आ चुका था—और अपनी गिरफ्तारी के दूसरे घण्टे में तेरे इसी हेलीकॉप्टर को लेकर भैरों मन्दिर गया था वहां इस समय पुलिस का कब्जा हो चुका होगा—वो मेरे शागिर्द हैं—जो वक्त पर आ गए और इस खेल का आखिरी सीन उनके हाथों तैयार हुआ—तुम्हें यह जानकर जरूर हैरानी होगी कि वो चौदह—पन्द्रह वर्ष के दो लड़के हैं—जिन्होंने शुरू से कुमार पर नजर रखी थी—मैंने बताया न मैं तेरे पीछे काफी अर्से से लगा हुआ हूं—मुझे पता लगा था कि कुमार तेरे लिए काम करता है—मैंने ही उन्हें कुमार के पीछे लगाया था—कुमार के जरिये वे खान तक पहुंचे—लेकिन खान एक लालची शिकारी ही निकला बस—लेकिन जब कुमार का पीछा करते हुए पता चला कि चौहान नाम का भी कोई

शिकारी है तो मेरे कान खड़े हुए—उस रात जब सूनी घाटी के खजाने वाली प्लेट का नक्शा समझने के लिए तुम राय का अपहरण करके लाए उस दिन पहली बार मैंने चौहान को देखा और महसूस किया कि मेरी अब तक कि भाग-दौड़ बेकार नहीं गई—मैंने कुमार को उसी समय गिरफ्तार कर लिया था जब उसने राय को अपने साथी जोम्बा के हवाले किया था—उससे पता चला कि वह अलग से अपने ग्रुप के साथ सूनी घाटी जाना चाहता था—भले ही वह तुम्हारा आदमी था और तुम्हारे ही कहने पर उसने खान से दोस्ती की थी—लेकिन वह तुम्हें डबल क्रॉस कर रहा था उसने डोंगा को बहुत पहले से अपने कब्जे में किया हुआ था—डोंगा वास्तव में अमरीकन जासूस है—वह भी कोबरा को गिरफ्तार करने के चक्कर में था—और तेरे पीछे उस समय से था जब तूने अमरीका के बैंक से दो करोड़ डालर रिवॉल्वर की नोक पर निकाल लिए थे और तीन खून किए थे—जिन तीन आदमियों का खून तूने किया उनमें एक डोंगा का सगा भाई था—और इसीलिए वह जान कर खतरा उठा कर अपने भाई की मौत का बदला लेने के लिए तेरे पीछे लगा और भारत आया—यहां आकर उसने अपनी योजना बनाई—डोंगा के नाम से वो रानीनगर के इलाके में नामी बदमाश के रूप में उभरा—उस पर तेरी नजर पड़ी और तूने उसे अपने दल में मिला लिया जल्दी ही डोंगा ने तेरा विश्वास जीत लिया—लेकिन उसने एक भूल कर दी—अपने गुप्त सन्देश लिखकर वह अपने चाकू के खोखले हत्थे में छिपा लेता था और उसे बाजार में किसी दुकान पर बेच आता था—यहां उसके कई आदमी थे—जो गिनी चुनी दुकानों पर रोज जाते थे—और जिस दिन भी उनमें से किसी दुकान पर चाकू मिल जाता वे उसे खरीद लेते और उसमें रखे सन्देशों को पढ़कर डोंगा के लिए काम करते थे—एक बार कुमार के हाथ डोंगा का चाकू लग गया—उसे वह सन्देश भी मिल गए—और उसी से उसने डोंगा को ब्लैक मेल करना शुरू कर दिया

—उसे यह नहीं पता था कि डोंगा अमरीकी जासूस है—उसे सिर्फ इतना पता था कि डोंगा कोबरा से गद्दारी कर रहा है—। यही बात मुझे कुमार से मालूम हुई और वह खंजर भी—जिसे दिखाकर मैंने डोंगा को कब्जे में किया—लेकिन जब हम कैद हो गए तब डोंगा ने मुझे अपनी असलियत बता दी—उसने ही कोबरा के दर-वाजे की एक सलाख को घुमाकर दरवाजा खोला था—और कुछ देर पहले तक वो मेरे साथ था—इस समय वो भैरों मन्दिर के तह-खाने में होगा।"

इतना कहकर नकाबपोश कोबरा की ओर बढ़ा—फिर अचा-नक ही उसका पैर घूमा और कोबरा की कनपटी पर एक ठोकर पड़ी।

कोबरा के मुंह से एक तेज सिसकारी निकली और अगले ही क्षण बेहोश होकर लुढ़क गया।

नकाबपोश को अब भी विश्वास नहीं हुआ कि कोबरा वास्तव में बेहोश हो गया है—उसने जेब से एक शीशी निकाली और उसे दबाया—शीशी में से क्लोरोफार्म की बौछार-सी निकली और कोबरा का नकाब गीला हो गया—उसके नकाब में सांस लेने के लिए बनाए छेद से क्लोरोफार्म उन छेदों में चली गई थी।

तभी पीछे से स्वर उभरा—"चीफ—क्या कोबरा की खाट खड़ी कर दी···।"

"आधी खड़ी की है···।"

"बस रहने दो फिर बाकी पुलिस कर लेगी—हमें तो इनके दर्शन करा दो—ताकि हमारा ये जन्म सफल हो जाए···।"

नकाबपोश ने नीचे झुक कर कोबरा का नकाब उलट दिया।

वह चौहान था।

□ □

अगले दिन समाचार-पत्रों में कोबरा की गिरफ्तारी की धूम थी—और श्रेय मिला था बाल सीक्रेट सर्विस के दीपू और चन्दू को मगर उनका नाम नहीं दिया गया था—उनके नाम के स्थान पर लिखा था—बाल सीक्रेट सर्विस के दो उस्तादों ने कोबरा को तिलस्मी इमारत में ही कोबरा को कैद कर लिया—बाल सीक्रेट सर्विस के चीफ ने भी दो उस्तादों के साथ मिलकर पुलिस को इमा-रत का कब्जा दिलवाया और कोबरा को पुलिस के हवाले किया। इस केस में एक दिलचस्प बात ये भी रही थी खुद पुलिस कमिश्नर प्रतापसिंह ने भेष बदलकर अपराधियों को धोखा दिया—लेकिन उनसे पहले ही—बाल सीक्रेट सर्विस के दो उस्तादों ने उनका वह काम कर दिया जो उन्हें करना पड़ता।

कुल सत्तर आदमी गिरफ्तार किए और दस करोड़ की कीमत का अवैध माल बरामद किया गया। इसमें से चार करोड़ के हीरे तो दो उस्तादों ने कोबरा की गिरफ्तारी से पहले ही उसके आदमियों को धोखा देकर हासिल कर लिए थे—दोनों ने बड़ी चालाकी से काम किया था—एक ने गोली चलाई और धुवें के बम फेंके दूसरे ने हीरों की पटी बदली और उनके एक साथी को घायल किया।

हां—डोंगा का नाम अखबारों में नहीं आया—डोंगा जिसका असली नाम माइक स्पेलिन था—उसे दो दिन बाद उसके देश वापस भेज दिया गया। यहां यह बताना भी आवश्यक है कि डोंगा (माइक स्पेलिन) के शरीर का काला रंग वास्तव में रंग था—असल में वह गोरा चिट्टा खूबसूरत नौजवान था—।

खान ने खुद गिरफ्तारी दे दी थी—लेकिन जब उसे मिस्टर राय ने बताया कि उसने जिस तख्तों की चोरी की थी—वह वास्तव में नकली थी···ऐसी चीजें संग्रहालय में नकली रखी जाती हैं—

उस तख्ती पर बना नक्शा···अफ्रीका के एक जंगली कबीले का नक्शा है और उस कबीले के जंगलियों को आदमखोर कहा जाता है—अगर वे लोग वहां पहुंच जाते तो जंगलियों की हांडियों में उनकी बोटियां पक रहीं होती···तो वह कांप उठा।

चौहान के बारे में यह बताना भी जरूरी है कि वो खुद मैदान में क्यों आया था—दरअसल उसे कुमार पर सन्देह था··· कुमार की चालों को समझने के लिए ही वह कुमार के साथ खान से मिला था—और उसने नकली तख्ती को असली समझ कर गायब किया और उसके स्थान पर अपनी बनाई हुई तख्ती राय को दिखायी थी···जिस पर कुमार और खान को सन्देह नहीं हुआ था।

उसी दिन चौहान के पहले जीवन की कहानी सुनने के लिए चन्दू-दीपू शम्भू काका के पास पहुंचे···लेकिन उन्हें पता चला कि शम्भू काका यानि बाल सीक्रेट सर्विस के चीफ किसी विभागीय काम से लंदन गये हैं···तो उन्हें थोड़ी निराशा हुई···लेकिन उसी दिन शहर में एक नई फिल्म रिलीज हुई थी···इसलिए उन्होंने जल्दी ही अपनी निराशा दूर की और नगीना पैलेस पहुंच गए··· वहां हाऊस फुल था लेकिन ब्लैक मार्किट गर्म थी···दोनों ने एक ब्लैकिए को पकड़ कर उसकी थोड़ी ठोक पीट करके पुलिस के हवाले किया···और दो टिकटें मुफ्त में हासिल करके फिल्म देखी···।

लेकिन फिल्म में वह बात कहां थी जो उनके वास्तविक जीवन में थीं···। मारधाड़ [illegible] सभी कुछ तो था उनके जीवन में···।

***

विमल बाल पॉकेट बुक्स

में

चन्दू-दीपू सीरीज

के इसी सैट के उपन्यास

☐ वतन के दुश्मन	···	2/-
☐ बैंक में डकैती	···	1/50
☐ दो उस्ताद	···	1/50
☐ मूर्खों का सरदार	···	1/50
☐ खूनी खजाना	···	1/50
☐ धरती के शैतान	···	1/50
☐ सुनहरा बिच्छू	···	1/50
☐ कनकटा चोर	···	1/50
☐ चलती-फिरती लाश	···	1/50

प्रकाशित हो चुका है।

विमल प्रकाशन

C-3/121-अशोक विहार,
फेज-II, दिल्ली-110052

दोस्तों!

आपके लिये सुरूचिपूर्ण रहस्य व रोमांच से भरपूर और मनोरंजक बाल उपन्यास लेकर आये हैं–विमल बाल पॉकेट बुक्स ! इन उपन्यासों में आपकी भेंट दीपू और चन्दू से होगी .... जिनके हैरतअंगेज कारनामे पढ़कर कभी आप हंसेगें तो कभी-कभी आपका मन ढ़िसूंग - ढ़िसूंग करने को चाहेगा।

अगर आपने विमल बाल पॉकेट बुक्स में प्रकाशित बाल उपन्यासों को अभी तक नहीं पढ़ा तो आज ही चन्दू-दीपू सीरीज का रोचक पूरा सैट खरीद कर अवश्य पढ़ें।

विमल पॉकेट बुक्स

दिल्ली –52